قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

لَنْ تَنَالُوا

पारा - 4

eParah

وَمَا	تُحِبُّوْنَ ۬ؕ	مِمَّا	تُنْفِقُوْا	حَتّٰى	الْبِرَّ	تَنَالُوا	لَنْ
और जो	तुम पसंद करते हो	उसमें से जो	तुम ख़र्च करो	यहां तक कि	नेकी को	तुम पा सकते	हरगिज़ नहीं

الطَّعَامِ	كُلُّ	عَلِيْمٌ ﴿92﴾	بِهٖ	اللّٰهَ	فَاِنَّ	مِنْ شَيْءٍ	تُنْفِقُوْا
खाना	हर	ख़ूब जानने वाला है	उसे	अल्लाह	तो बेशक	कोई चीज़	तुम ख़र्च करोगे

اِسْرَآءِيْلُ	حَرَّمَ	مَا	اِلَّا	لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	حِلًّا	كَانَ
इस्राईल ने	हराम किया	जो	मगर	बनी इस्राईल के लिए	हलाल	था

فَاْتُوْا	قُلْ	التَّوْرٰىةُ ؕ	تُنَزَّلَ	اَنْ	مِنْ قَبْلِ	عَلٰى نَفْسِهٖ
पस ले आओ	कह दीजिए	तौरात	नाज़िल की जाती	कि	इससे पहले	अपने नफ़्स पर

افْتَرٰى	فَمَنِ	صٰدِقِيْنَ ﴿93﴾	كُنْتُمْ	اِنْ	فَاتْلُوْهَآ	بِالتَّوْرٰىةِ
गढ़ ले	तो जो कोई	सच्चे	हो तुम	अगर	फिर पढ़ो उसे	तौरात को

وقف جبريل عليه السلام

الظّٰلِمُوْنَ ﴿94﴾	هُمُ	فَاُولٰٓئِكَ	ذٰلِكَ	مِنْ بَعْدِ	الْكَذِبَ	عَلَى اللّٰهِ
जो ज़ालिम हैं	वो	तो यही लोग हैं	इसके	बाद	झूठ	अल्लाह पर

كَانَ	وَمَا	حَنِيْفًا ؕ	اِبْرٰهِيْمَ	مِلَّةَ	فَاتَّبِعُوْا	اللّٰهُ قف	صَدَقَ	قُلْ
था वो	और ना	जो यकसू था	इब्राहीम की	मिल्लते	तो पैरवी करो	अल्लाह ने	सच फ़रमाया	कह दीजिए

لَلَّذِيْ	لِلنَّاسِ	وُّضِعَ	بَيْتٍ	اَوَّلَ	اِنَّ	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿95﴾
यक़ीनन वही है जो	लोगों के लिए	जो बनाया गया	घर	पहला	बेशक	मुशरिकीन में से

بَيِّنٰتٌ	اٰيٰتٌۢ	فِيْهِ	لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿96﴾ ج	وَّهُدًى	مُبٰرَكًا	بِبَكَّةَ
वाज़ेह	निशानियां हैं	उसमें	तमाम जहानों के लिए	और हिदायत है	मुबारक/बाबरकत	मक्का में है

عَلَى	وَلِلّٰهِ	اٰمِنًا ؕ	كَانَ	دَخَلَهٗ	وَمَنْ	اِبْرٰهِيْمَ ۬ۚ	مَّقَامُ
ऊपर	और अल्लाह ही के लिए है	अमन वाला	वो हो गया	दाख़िल हुआ इसमें	और जो कोई	इब्राहीम है	मक़ामे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

النَّاسِ	حِجُّ	الْبَيْتِ	مَنِ	اسْتَطَاعَ	اِلَيْهِ	سَبِيْلًا ط	وَمَنْ	كَفَرَ
लोगों के	हज करना	बैतुल्लाह का	जो कोई	इस्तिताअत रखता हो	तरफ़ उसके	रास्ते की	और जो कोई	कुफ़्र करे

فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَنِيٌّ	عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿97﴾	قُلْ	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	لِمَ
तो बेशक	अल्लाह	बहुत बेनियाज़ है	तमाम जहानों से	कह दीजिए	ऐ अहले किताब	क्यों

تَكْفُرُوْنَ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ق	وَاللّٰهُ	شَهِيْدٌ	عَلٰى	مَا	تَعْمَلُوْنَ ﴿98﴾
तुम कुफ़्र करते हो	अल्लाह की आयात का	और अल्लाह	ख़ूब गवाह है	उस पर	जो	तुम अमल करते हो

قُلْ	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	لِمَ	تَصُدُّوْنَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	مَنْ
कह दीजिए	ऐ अहले किताब	क्यों	तुम रोकते/फिरते हो	अल्लाह के रास्ते से	उसे जो

اٰمَنَ	تَبْغُوْنَهَا	عِوَجًا	وَّاَنْتُمْ	شُهَدَآءُ ط	وَمَا	اللّٰهُ
ईमान लाया	तुम तलाश करते हो उसमें	टेढ़ापन/कजी	हालांकि तुम	गवाह हो	और नहीं है	अल्लाह

بِغَافِلٍ	عَمَّا	تَعْمَلُوْنَ ﴿99﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنْ	تُطِيْعُوْا
गाफ़िल	उस से जो	तुम अमल करते हो	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	अगर	तुम इताअत करोगे

فَرِيْقًا	مِّنَ الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	يَرُدُّوْكُمْ	بَعْدَ	اِيْمَانِكُمْ
एक गिरोह की	उनमें से जो	दिए गए	किताब	वो फेर देंगे तुम्हें	बाद	तुम्हारे ईमान के

كٰفِرِيْنَ ﴿100﴾	وَكَيْفَ	تَكْفُرُوْنَ	وَاَنْتُمْ	تُتْلٰى	عَلَيْكُمْ
काफ़िर(बना कर)	और कैसे	तुम कुफ़्र करते हो	हालांकि तुम	पढ़ी जाती हैं	तुम पर

اٰيٰتُ	اللّٰهِ	وَفِيْكُمْ	رَسُوْلُهٗ ط	وَمَنْ	يَّعْتَصِمْ	بِاللّٰهِ	فَقَدْ
आयात	अल्लाह की	और तुम में है	उसका रसूल	और जो	मज़्बूती से थाम ले	अल्लाह को	तो तहक़ीक़

هُدِيَ	اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿101﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اتَّقُوا
वह हिदायत दे दिया गया	तरफ़ रास्ते	सीधे के	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	डरो

ع 10 10 1

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّسْلِمُوْنَ ﴿102﴾	وَ اَنْتُمْ	اِلَّا	وَلَا تَمُوْتُنَّ	تُقٰتِهٖ	حَقَّ	اللّٰهَ
मुसलमान हो	इस हाल में कि तुम	मगर	और हरगिज़ ना तुम मरना	उस से डरने का	जैसे हक़ है	अल्लाह से

نِعْمَتَ	وَاذْكُرُوْا	تَفَرَّقُوْا ۠	وَّلَا	جَمِيْعًا	بِحَبْلِ اللّٰهِ	وَاعْتَصِمُوْا
नेअमत को	और याद करो	तुम फ़िरक़ा-फ़िरक़ा बनो	और ना	सबके सब	अल्लाह की रस्सी को	और मज़बूती से पकड़ लो

قُلُوْبِكُمْ	بَيْنَ	فَاَلَّفَ	اَعْدَآءً	كُنْتُمْ	اِذْ	عَلَيْكُمْ	اللّٰهِ
तुम्हारे दिलों के	दर्मियान	तो उसने उल्फ़त डाल दी	दुश्मन	थे तुम	जब	अपने ऊपर	अल्लाह की

حُفْرَةٍ	عَلٰى شَفَا	وَ كُنْتُمْ	اِخْوَانًا ۚ	بِنِعْمَتِهٖٓ	فَاَصْبَحْتُمْ
गढ़े के	किनारे पर	और थे तुम	भाई-भाई	उसकी नेअमत से	तो हो गए तुम

لَكُمْ	اللّٰهُ	يُبَيِّنُ	كَذٰلِكَ	مِّنْهَا ؕ	فَاَنْقَذَكُمْ	مِّنَ النَّارِ
तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह	उस से	तो उसने बचा लिया तुम्हें	आग के

يَّدْعُوْنَ	اُمَّةٌ	مِّنْكُمْ	وَلْتَكُنْ	تَهْتَدُوْنَ ﴿103﴾	لَعَلَّكُمْ	اٰيٰتِهٖ
जो दावत दें	एक गिरोह(के लोग)	तुम में से	और ज़रूर हो	तुम हिदायत पाओ	ताकि तुम	आयात अपनी

عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ	وَيَنْهَوْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَيَاْمُرُوْنَ	اِلَى الْخَيْرِ
बुराई से	और जो रोकें	नेकी का	और हुक्म दें	तरफ़ ख़ैर के

تَفَرَّقُوْا	كَالَّذِيْنَ	تَكُوْنُوْا	وَلَا	الْمُفْلِحُوْنَ ﴿104﴾	هُمُ	وَاُولٰٓئِكَ
फ़िरक़ा-फ़िरक़ा बन गए	उनकी तरह जो	तुम हो जाना	और ना	जो फ़लाह पाने वाले हैं	वो	और यही लोग हैं

لَهُمْ	وَاُولٰٓئِكَ	الْبَيِّنٰتُ ؕ	جَآءَهُمُ	مَا	مِنْۢ بَعْدِ	وَاخْتَلَفُوْا
उनके लिए	और यही लोग हैं	वाज़ेह निशानियां	आ गईं उनके पास	जो	बाद इसके	और उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया

وُجُوْهٌ ۚ	وَّتَسْوَدُّ	وُجُوْهٌ	تَبْيَضُّ	يَّوْمَ	عَظِيْمٌ ﴿105﴾ ۙ	عَذَابٌ
कुछ चेहरे	और स्याह होंगे	कुछ चेहरे	रोशन होंगे	जिस दिन	बहुत बड़ा	अज़ाब है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاَمَّا	الَّذِيْنَ	اسْوَدَّتْ	وُجُوْهُهُمْ ق	اَكَفَرْتُمْ	بَعْدَ	اِيْمَانِكُمْ
तो रहे	वो लोग जो	स्याह होंगे	चेहरे जिनके	क्या कुफ़्र किया तुमने	बाद	अपने ईमान के

فَذُوْقُوا	الْعَذَابَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَكْفُرُوْنَ ﴿106﴾	وَ اَمَّا	الَّذِيْنَ
पस चखो	अज़ाब को	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम कुफ़्र करते	और रहे	वो जो

ابْيَضَّتْ	وُجُوْهُهُمْ	فَفِيْ رَحْمَةِ	اللّٰهِ ط	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ﴿107﴾
सफ़ेद होंगे	चेहरे जिनके	तो रहमत में होंगे	अल्लाह की	वो	उस में	हमेशा रहने वाले हैं

تِلْكَ	اٰيٰتُ	اللّٰهِ	نَتْلُوْهَا	عَلَيْكَ	بِالْحَقِّ ط	وَمَا	اللّٰهُ
ये	आयात हैं	अल्लाह की	हम पढ़ रहे हैं उन्हें	आप पर	साथ हक़ के	और नहीं	अल्लाह

يُرِيْدُ	ظُلْمًا	لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿108﴾	وَ لِلّٰهِ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا
इरादा रखता	किसी ज़ुल्म का	जहान वालों के लिए	और अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ

ع 11 8 2

فِي الْاَرْضِ ط	وَ اِلَى اللّٰهِ	تُرْجَعُ	الْاُمُوْرُ ﴿109﴾ ع	كُنْتُمْ	خَيْرَ	اُمَّةٍ
ज़मीन में है	और तरफ़ अल्लाह ही के	लौटाए जाते हैं	सब काम	हो तुम	बेहतरीन	उम्मत

اُخْرِجَتْ	لِلنَّاسِ	تَاْمُرُوْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَ تَنْهَوْنَ	عَنِ الْمُنْكَرِ
निकाली गई हो	लोगों के लिए	तुम हुक्म देते हो	मारूफ़/अच्छाई का	और तुम रोकते हो	मुंकर/बुराई से

وَ تُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ ط	وَ لَوْ	اٰمَنَ	اَهْلُ الْكِتٰبِ	لَكَانَ	خَيْرًا
और तुम ईमान लाते हो	अल्लाह पर	और अगर	ईमान लाते	अहले किताब	अलबत्ता होता	बेहतर

لَّهُمْ ط	مِنْهُمُ	الْمُؤْمِنُوْنَ	وَ اَكْثَرُهُمُ	الْفٰسِقُوْنَ ﴿110﴾	لَنْ
उनके लिए	बाज़ उनके	मोमिन हैं	और अक्सर उनके	फ़ासिक़ हैं	हरगिज़ नहीं

يَّضُرُّوْكُمْ	اِلَّآ	اَذًى ط	وَ اِنْ	يُّقَاتِلُوْكُمْ	يُوَلُّوْكُمُ
वह नुक़्सान देंगे तुम्हें	सिवाए	अज़ियत के	और अगर	वह जंग करेंगे तुमसे	वह फेर दें तुमसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاَدْبَارَ قف	ثُمَّ	لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿111﴾	ضُرِبَتْ	عَلَيْهِمُ	الذِّلَّةُ	اَيْنَ مَا
पुश्तें	फिर	ना वह मदद किए जाएंगे	मार दी गई	उन पर	ज़िल्लत	जहां कहीं

ثُقِفُوْٓا	اِلَّا	بِحَبْلٍ	مِّنَ اللّٰهِ	وَحَبْلٍ	مِّنَ النَّاسِ	وَبَآءُوْ
वो पाए गए	मगर	साथ रस्सी (ताल्लुक़)के	अल्लाह की	और रस्सी (ताल्लुक़) के	लोगों की	और वो लौटे

بِغَضَبٍ	مِّنَ اللّٰهِ	وَضُرِبَتْ	عَلَيْهِمُ	الْمَسْكَنَةُ ط	ذٰلِكَ
साथ ग़ज़ब के	अल्लाह की तरफ़ से	और मार दी गई	उन पर	मोहताजी	ये

بِاَنَّهُمْ	كَانُوْا	يَكْفُرُوْنَ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	وَيَقْتُلُوْنَ	الْاَنْۢبِيَآءَ
बवजह इसके कि वो	थे वो	वो कुफ़्र करते	अल्लाह की आयात का	और वह क़त्ल करते	नबियों को

بِغَيْرِ	حَقٍّ ط	ذٰلِكَ	بِمَا	عَصَوْا	وَّكَانُوْا	يَعْتَدُوْنَ ﴿112﴾ ق
बग़ैर	हक़ के	यह	बवजह उसके जो	उन्होंने नाफ़रमानी की	और थे वो	वो हद से बढ़ जाते

لَيْسُوْا	سَوَآءً ط	مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	اُمَّةٌ	قَآئِمَةٌ	يَّتْلُوْنَ
नहीं हैं वो सब	यकसां/बराबर	अहले किताब में से	एक जमाअत है	जो क़ायम है (हक़ पर)	वो तिलावत करते हैं

اٰيٰتِ اللّٰهِ	اٰنَآءَ	الَّيْلِ	وَهُمْ	يَسْجُدُوْنَ ﴿113﴾	يُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ
अल्लाह की आयात की	घड़ियों में	रात की	और वो	सज्दा करते हैं	वो ईमान रखते हैं	अल्लाह पर

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَيَاْمُرُوْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَيَنْهَوْنَ	عَنِ الْمُنْكَرِ
और आख़िरी दिन पर	और वो हुक्म देते हैं	नेकी का	और वो रोकते हैं	बुराई से

وَيُسَارِعُوْنَ	فِي الْخَيْرٰتِ ط	وَاُولٰٓئِكَ	مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿114﴾	وَمَا
और वो एक दूसरे से जल्दी करते हैं	नेकियों में	और यही लोग हैं	सालेहीन में से	और जो भी

يَفْعَلُوْا	مِنْ خَيْرٍ	فَلَنْ	يُّكْفَرُوْهُ ط	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌۢ
वो करेंगे	भलाई में से	तो हरगिज़ नहीं	वो नाक़द्री किए जाएंगे उसकी	और अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿115﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَنْ	تُغْنِيَ	عَنْهُمْ
मुत्तक़ी लोगों को	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	हरगिज़ नहीं	काम आऐंगे	उन्हें

اَمْوَالُهُمْ	وَلَآ	اَوْلَادُهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	شَيْـًٔا ؕ	وَاُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ
माल उनके	और ना	औलाद उनकी	अल्लाह से	कुछ भी	और यही लोग हैं	साथी

النَّارِ ۚ	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ﴿116﴾	مَثَلُ	مَا	يُنْفِقُوْنَ
आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	मिसाल	उसकी जो	वो ख़र्च करते हैं

فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	كَمَثَلِ	رِيْحٍ	فِيْهَا	صِرٌّ	اَصَابَتْ
इस ज़िंदगी में	दुनिया की	मानिंद मिसाल	हवा के है	जिसमें	सख़्त सर्दी हो	वो पहुंचे

حَرْثَ	قَوْمٍ	ظَلَمُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	فَاَهْلَكَتْهُ ؕ	وَمَا	ظَلَمَهُمُ
खेती को	एक क़ौम की	जिन्होंने ज़ुल्म किया	अपने नफ़्सों पर	तो उसने हलाक कर दिया उसे	और नहीं	ज़ुल्म किया उन पर

اللّٰهُ	وَلٰكِنْ	اَنْفُسَهُمْ	يَظْلِمُوْنَ ﴿117﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
अल्लाह ने	और लेकिन	अपने ही नफ़्सों पर	वो ज़ुल्म करते थे	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो

لَا تَتَّخِذُوْا	بِطَانَةً	مِّنْ دُوْنِكُمْ	لَا يَاْلُوْنَكُمْ	خَبَالًا ؕ
ना तुम बनाओ	दिली दोस्त/राज़दान	अपने इलावा को	ना वो कमी करेंगे तुम से	किसी ख़राबी की

وَدُّوْا	مَا عَنِتُّمْ ۚ	قَدْ	بَدَتِ	الْبَغْضَآءُ	مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ
वो दिल से चाहते हैं	कि मुश्किल में पड़ो तुम	तहक़ीक़	ज़ाहिर हो गया	बुग़्ज़	उनके मुंहों से

وَمَا	تُخْفِيْ	صُدُوْرُهُمْ	اَكْبَرُ ؕ	قَدْ	بَيَّنَّا	لَكُمُ	الْاٰيٰتِ
और जो	छुपाते हैं	सीने उनके	ज़्यादा बड़ा है	तहक़ीक़	वाज़ेह कर दीं हमने	तुम्हारे लिए	निशानियां

اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْقِلُوْنَ ﴿118﴾	هَاَنْتُمْ	اُولَآءِ	تُحِبُّوْنَهُمْ	وَلَا
अगर	हो तुम	अक़्ल रखते	ख़बरदार तुम	वो लोग हो	तुम मोहब्बत रखते हो उनसे	और नहीं

© AL-HIDAYA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَقُوْكُمْ	وَاِذَا	كُلِّهٖ ج	بِالْكِتٰبِ	وَتُؤْمِنُوْنَ	يُحِبُّوْنَكُمْ
वो मुलाक़ात करते हैं तुमसे	और जब	सारी की सारी	किताब पर	और तुम ईमान रखते हो	वो मोहब्बत रखते तुमसे

الْاَنَامِلَ	عَلَيْكُمُ	عَضُّوْا	خَلَوْا	وَاِذَا	اٰمَنَّا ۚ	قَالُوْٓا
उंगलियां	तुम पर	वो काटते हैं	वो तन्हा होते हैं	और जब	ईमान लाए हम	कहते हैं

عَلِيْمٌۢ	اللّٰهَ	اِنَّ	بِغَيْظِكُمْ ط	مُوْتُوْا	قُلْ	مِنَ الْغَيْظِ ط
ख़ूब जानने वाला है	अल्लाह	बेशक	साथ अपने गुस्से के	मर जाओ	कह दीजिए	गुस्से से

وَاِنْ	تَسُؤْهُمْ ز	حَسَنَةٌ	تَمْسَسْكُمْ	اِنْ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (119)
और अगर	वो बुरी लगती है उन्हें	कोई भलाई	पहुंचे तुम्हें	अगर	सीनों वाले (भेद)

وَتَتَّقُوْا	تَصْبِرُوْا	وَاِنْ	بِهَا ط	يَّفْرَحُوْا	سَيِّئَةٌ	تُصِبْكُمْ
और तुम तक़्वा करो	तुम सब्र करो	और अगर	उस पर	वो खुश होते हैं	कोई बुराई	पहुंचती है तुम्हें

يَعْمَلُوْنَ	بِمَا	اللّٰهَ	اِنَّ	شَيْـًٔا ط	كَيْدُهُمْ	لَا يَضُرُّكُمْ
वो अमल करते हैं	उसको जो	अल्लाह	बेशक	कुछ भी	चाल उनकी	ना नुक़्सान देगी तुम्हें

ع 12 11 3

الْمُؤْمِنِيْنَ	تُبَوِّئُ	مِنْ اَهْلِكَ	غَدَوْتَ	وَاِذْ	مُحِيْطٌ (120) ع
मोमिनों को	आप मुतय्यन(तैनात) कर रहे थे	अपने घर वालों से	सुबह सवेरे निकले आप	और जब	घेरने वाला है

هَمَّتْ	اِذْ	عَلِيْمٌ (121) لا	سَمِيْعٌ	وَاللّٰهُ	لِلْقِتَالِ ط	مَقَاعِدَ
इरादा किया	जब	ख़ूब जानने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है	और अल्लाह	जंग के लिए	ठिकानों/मोर्चों पर

وَعَلَى اللّٰهِ	وَلِيُّهُمَا ط	وَاللّٰهُ	تَفْشَلَا لا	اَنْ	مِنْكُمْ	طَّآئِفَتٰنِ
और अल्लाह ही पर	मददगार था उन दोनों का	और अल्लाह	वो दोनों बुज़दिली दिखाएं	कि	तुम में से	दो गिरोहों ने

وَّاَنْتُمْ	بِبَدْرٍ	اللّٰهُ	نَصَرَكُمُ	وَلَقَدْ	الْمُؤْمِنُوْنَ (122)	فَلْيَتَوَكَّلِ
हालांकि तुम	बदर में	अल्लाह ने	मदद की तुम्हारी	और अलबत्ता तहक़ीक़	ईमान वाले	पस चाहिए के तवक्कुल करें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَقُوْلُ	اِذْ	تَشْكُرُوْنَ ﴿123﴾	لَعَلَّكُمْ	اللّٰهَ	فَاتَّقُوا	اَذِلَّةٌ ۚ
आप कह रहे थे	जब	तुम शुक्र अदा करो	ताकि तुम	अल्लाह से	पस डरो	कमज़ोर थे

اَلْفٍ	بِثَلٰثَةِ	رَبُّكُمْ	يُّمِدَّكُمْ	اَنْ	يَّكْفِيَكُمْ	اَلَنْ	لِلْمُؤْمِنِيْنَ
हज़ार	साथ तीन	रब तुम्हारा	मदद करे तुम्हारी	कि	काफ़ी होगा तुम्हें	क्या नहीं	मोमिनों को

وَ تَتَّقُوْا	تَصْبِرُوْا	اِنْ	بَلٰٓى ۙ	مُنْزَلِيْنَ ﴿124﴾ ط	مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
और तुम तक़्वा करोगे	तुम सब्र करोगे	अगर	क्यों नहीं/बल्कि	उतारे हुए	फ़रिश्तों के

بِخَمْسَةِ	رَبُّكُمْ	يُمْدِدْكُمْ	هٰذَا	مِّنْ فَوْرِهِمْ	وَ يَاْتُوْكُمْ
साथ पांच	रब तुम्हारा	मदद करेगा तुम्हारी	इस तरह	अपने जोश से	और वो आएं तुम्हारे पास

اِلَّا	اللّٰهُ	جَعَلَهُ	وَمَا	مُسَوِّمِيْنَ ﴿125﴾	مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ	اٰلٰفٍ
मगर	अल्लाह ने	बनाया उसे	और नहीं	निशान लगाने वाले	फ़रिश्तों के	हज़ार

ربع

اِلَّا	النَّصْرُ	وَمَا	بِهٖ ط	قُلُوْبُكُمْ	وَلِتَطْمَئِنَّ	لَكُمْ	بُشْرٰى
मगर	मदद	और नहीं	साथ इसके	दिल तुम्हारे	और ताकि मुत्मइन हो जाएं	तुम्हारे लिए	ख़ुशख़बरी

مِّنَ الَّذِيْنَ	طَرَفًا	لِيَقْطَعَ	الْحَكِيْمِ ﴿126﴾ لا	الْعَزِيْزِ	مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ
उनका जिन्होंने	एक हिस्सा	ताकि वो काट दे	बहुत हिक्मत वाला है	जो बहुत ज़बरदस्त है	अल्लाह के पास से

لَكَ	لَيْسَ	خَآئِبِيْنَ ﴿127﴾	فَيَنْقَلِبُوْا	يَكْبِتَهُمْ	اَوْ	كَفَرُوْٓا
आपके लिए	नहीं है	नामुराद (होकर)	तो वो लौट जाएं	वो ज़लील कर दे उन्हें	या	कुफ़्र किया

فَاِنَّهُمْ	يُعَذِّبَهُمْ	اَوْ	عَلَيْهِمْ	يَتُوْبَ	اَوْ	شَيْءٌ	مِنَ الْاَمْرِ
तो बेशक वो	वो अज़ाब दे उन्हें	या	उन पर	वो मेहरबान हो जाए	ख़्वाह	कुछ भी	मामले में से

يَغْفِرُ	فِي الْاَرْضِ ط	وَمَا	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا	وَلِلّٰهِ	ظٰلِمُوْنَ ﴿128﴾
वो बख़्श देता है	ज़मीन में है	और जो कुछ	आसमानों में है	जो कुछ	और अल्लाह ही के लिए है	ज़ालिम हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيُعَذِّبُ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ
जिसके लिए	वो चाहता है	और वो अज़ाब देता है	जिसे	वो चाहता है	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

13 ع 9 4

رَّحِيْمٌ ﴿129﴾ ع	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَاْكُلُوا	الرِّبٰوٓا	اَضْعَافًا
निहायत रहम करने वाला है	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम खाओ	सूद	कई गुना

مُّضٰعَفَةً ص	وَّاتَّقُوا	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ ﴿130﴾ ج	وَاتَّقُوا	النَّارَ
बढ़ा चढ़ा कर	और डरो	अल्लाह से	ताकि तुम	तुम फ़लाह पा जाओ	और बचो/डरो	आग से

الَّتِيْٓ	اُعِدَّتْ	لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿131﴾ ج	وَاَطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَالرَّسُوْلَ	لَعَلَّكُمْ
वो जो	तैयार की गई है	काफ़िरों के लिए	और इताअत करो	अल्लाह की	और रसूल की	ताकि तुम

تُرْحَمُوْنَ ﴿132﴾ ج	وَسَارِعُوْٓا	اِلٰى مَغْفِرَةٍ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	وَجَنَّةٍ
तुम रहम किए जाओ	और एक दूसरे से जल्दी करो	तरफ़ बख़्शिश के	अपने रब की तरफ़ से	और जन्नत के

عَرْضُهَا	السَّمٰوٰتُ	وَالْاَرْضُ لا	اُعِدَّتْ	لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿133﴾ لا	الَّذِيْنَ
चौड़ाई है जिस की	आसमान	और ज़मीन	वो तैयार की गई है	मुत्तक़ी लोगों के लिए	वो लोग जो

يُنْفِقُوْنَ	فِي السَّرَّآءِ	وَالضَّرَّآءِ	وَالْكٰظِمِيْنَ	الْغَيْظَ	وَالْعَافِيْنَ
ख़र्च करते हैं	ख़ुशी में	और तकलीफ़ में	और ज़ब्त करने वाले हैं	सख़्त ग़ुस्से को	और दरगुज़र करने वाले हैं

عَنِ النَّاسِ ط	وَاللّٰهُ	يُحِبُّ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿134﴾ ج	وَالَّذِيْنَ	اِذَا	فَعَلُوْا
लोगों से	और अल्लाह	मोहब्बत रखता है	एहसान करने वालों से	और वो लोग जो	जब	करते हैं

فَاحِشَةً	اَوْ	ظَلَمُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	ذَكَرُوا	اللّٰهَ	فَاسْتَغْفَرُوْا
कोई बेहयाई	या	वो ज़ुल्म करते हैं	अपने नफ़्सों पर	वो याद करते हैं	अल्लाह को	पस माफ़ी मांगते हैं

لِذُنُوْبِهِمْ ص	وَمَنْ	يَّغْفِرُ	الذُّنُوْبَ	اِلَّا	اللّٰهُ قف	وَلَمْ
अपने गुनाहों के लिए	और कौन है जो	बख़्श दे	गुनाहों को	सिवाए	अल्लाह के	और नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُصِرُّوْا	عَلٰى	مَا	فَعَلُوْا	وَهُمْ	يَعْلَمُوْنَ ﴿135﴾	اُولٰٓئِكَ	جَزَآؤُهُمْ
वो इसरार करते	ऊपर उसके	जो	उन्होंने किया	जबकि वो	वो जानते हैं	यही लोग हैं	बदला उनका

مَّغْفِرَةٌ	مِّنْ رَّبِّهِمْ	وَجَنّٰتٌ	تَجْرِىْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ
बख़्शिश है	उनके रब की तरफ़ से	और बाग़ात हैं	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	وَنِعْمَ	اَجْرُ	الْعٰمِلِيْنَ ﴿136﴾ ؕ	قَدْ	خَلَتْ
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	और कितना अच्छा है	अजर	अमल करने वालों का	तहक़ीक़	गुज़र चुके

مِنْ قَبْلِكُمْ	سُنَنٌ ۙ	فَسِيْرُوْا	فِى الْاَرْضِ	فَانْظُرُوْا	كَيْفَ
तुम से पहले	कई तरीक़े	तो चलो फिरो	ज़मीन में	फिर देखो	किस तरह

كَانَ	عَاقِبَةُ	الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿137﴾	هٰذَا	بَيَانٌ	لِّلنَّاسِ	وَهُدًى
हुआ	अंजाम	झुठलाने वालो का	ये	एक बयान है	लोगों के लिए	और हिदायत

وَّمَوْعِظَةٌ	لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿138﴾	وَلَا	تَهِنُوْا	وَلَا	تَحْزَنُوْا	وَاَنْتُمُ
और नसीहत है	मुत्तक़ी लोगों के लिए	और ना	तुम कमज़ोर पड़ो	और ना	तुम ग़म करो	और तुम ही

الْاَعْلَوْنَ	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿139﴾	اِنْ	يَّمْسَسْكُمْ	قَرْحٌ	فَقَدْ
बुलंद हो	अगर	हो तुम	मोमिन	अगर	पहुंचा तुम्हें	कोई ज़ख़्म	तो तहक़ीक़

مَسَّ	الْقَوْمَ	قَرْحٌ	مِّثْلُهٗ ؕ	وَتِلْكَ	الْاَيَّامُ	نُدَاوِلُهَا
पहुंच चुका है	उस क़ौम को	ज़ख़्म	मानिंद उसी के	और ये	दिन	हम फेरते रहते हैं उन्हें

بَيْنَ	النَّاسِ ۚ	وَلِيَعْلَمَ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَيَتَّخِذَ
दर्मियान	लोगों के	और ताकि जान ले	अल्लाह	उनको जो	ईमान लाए	और वो बना ले

مِنْكُمْ	شُهَدَآءَ ؕ	وَاللّٰهُ	لَا يُحِبُّ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿140﴾ ۙ	وَلِيُمَحِّصَ	اللّٰهُ
तुम में से	गवाह/शहीद	और अल्लाह	नहीं वो मोहब्बत रखता	ज़ालिमों से	और ताकि ख़ालिस कर ले	अल्लाह

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَدْخُلُوا	اَنْ	حَسِبْتُمْ	اَمْ	الْكٰفِرِيْنَ (141)	وَيَمْحَقَ	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ
तुम दाख़िल हो जाओगे	कि	गुमान किया तुमने	क्या	काफ़िरों को	और मिटा दे	ईमान लाए	उन्हें जो

وَيَعْلَمَ	مِنْكُمْ	جٰهَدُوْا	الَّذِيْنَ	اللّٰهُ	يَعْلَمِ	وَلَمَّا	الْجَنَّةَ
और (ताकि) वो जान ले	तुम में से	जिहाद किया	उन्हें जिन्होंने	अल्लाह ने	जाना	हालांकि अभी तक नहीं	जन्नत में

اَنْ	مِنْ قَبْلِ	الْمَوْتَ	تَمَنَّوْنَ	كُنْتُمْ	وَلَقَدْ	الصّٰبِرِيْنَ (142)
कि	इस से पहले	मौत की	तुम तमन्ना करते	थे तुम	और अलबत्ता तहक़ीक़	सब्र करने वालों को

14 ع 14 5

مُحَمَّدٌ	وَمَا	تَنْظُرُوْنَ (143) ع	وَاَنْتُمْ	رَاَيْتُمُوْهُ	فَقَدْ	تَلْقَوْهُ ص
मोहम्मद	और नहीं हैं	तुम देख रहे थे	और तुम	देख लिया तुमने उसे	पस तहक़ीक़	तुम मिलो उसे

اَفَاۡئِنْ	الرُّسُلُ ط	مِنْ قَبْلِهٖ	خَلَتْ	قَدْ	رَسُوْلٌ ج	اِلَّا
क्या फिर अगर	कई रसूल	उनसे पहले	गुज़र चुके	तहक़ीक़	एक रसूल	मगर

يَّنْقَلِبْ	وَمَنْ	عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ط	انْقَلَبْتُمْ	اَوْ قُتِلَ	مَّاتَ
पलट जाएगा	और जो कोई	अपनी एड़ियों पर	पलट जाओगे तुम	या वो क़त्ल कर दिए जाएं	वो मर जाएं

اللّٰهُ	وَسَيَجْزِى	شَيْئًا ط	اللّٰهَ	يَّضُرَّ	فَلَنْ	عَلٰى عَقِبَيْهِ
अल्लाह	और अनक़रीब बदला देगा	कुछ भी	अल्लाह को	वो नुक़्सान देगा	तो हरगिज़ नहीं	अपनी दोनों एड़ियों पर

بِاِذْنِ اللّٰهِ	اِلَّا	تَمُوْتَ	اَنْ	لِنَفْسٍ	كَانَ	وَمَا	الشّٰكِرِيْنَ (144)
अल्लाह के इज़्न से	मगर	वो मरे	कि	किसी नफ़्स के लिए	है	और नहीं	शुक्र करने वालों को

مِنْهَا ج	نُؤْتِهٖ	الدُّنْيَا	ثَوَابَ	يُّرِدْ	وَمَنْ	مُّؤَجَّلًا ط	كِتٰبًا
उसमें से	हम दे देते हैं उसे	दुनिया का	बदला/सवाब का	चाहता है	और जो कोई	मुक़र्रर वक़्त	लिखा हुआ है

وَسَنَجْزِى	مِنْهَا ط	نُؤْتِهٖ	الْاٰخِرَةِ	ثَوَابَ	يُّرِدْ	وَمَنْ
और अनक़रीब हम बदला देंगे	उसमें से	हम दे देंगे उसे	आख़िरत का	सवाब	चाहता है	और जो कोई

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الشّٰكِرِيْنَ ﴿145﴾	وَكَاَيِّنْ	مِّنْ نَّبِيٍّ	قٰتَلَ ۙ	مَعَهٗ	رِبِّيُّوْنَ	كَثِيْرٌ ۚ
शुक्र करने वालों को	और कितने ही	नबियों में से	जंग की	उनके हमराह	रब वालों ने	बहुत से

فَمَا	وَهَنُوْا	لِمَآ	اَصَابَهُمْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَمَا	ضَعُفُوْا
तो ना	उन्होंने सुस्ती दिखाई	उसके लिए जो	पहुंचा उन्हें	अल्लाह के रास्ते में	और ना	वो कमज़ोर पड़े

وَمَا	اسْتَكَانُوْا ؕ	وَاللّٰهُ	يُحِبُّ	الصّٰبِرِيْنَ ﴿146﴾	وَمَا	كَانَ
और ना	वो दबे	और अल्लाह	मोहब्बत रखता है	सब्र करने वालों से	और ना	थी

قَوْلَهُمْ	اِلَّآ	اَنْ	قَالُوْا	رَبَّنَا	اغْفِرْ لَنَا	ذُنُوْبَنَا
बात उनकी	मगर	ये कि	उन्होंने कहा	ऐ हमारे रब	बख़्श दे हमारे लिए	गुनाह हमारे

وَ اِسْرَافَنَا	فِيْٓ اَمْرِنَا	وَثَبِّتْ	اَقْدَامَنَا	وَانْصُرْنَا	عَلَى الْقَوْمِ
और ज़्यादतियां हमारी	हमारे मामले में	और जमा दे	हमारे क़दमों को	और मदद फ़रमा हमारी	ऊपर उन लोगों के

الْكٰفِرِيْنَ ﴿147﴾	فَاٰتٰىهُمُ	اللّٰهُ	ثَوَابَ	الدُّنْيَا	وَحُسْنَ	ثَوَابِ
जो काफ़िर हैं	तो अता किया उन्हें	अल्लाह ने	सवाब	दुनिया का	और अच्छा	सवाब

الْاٰخِرَةِ ؕ	وَاللّٰهُ	يُحِبُّ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿148﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	ع 15 5 6
आख़िरत का	और अल्लाह	मोहब्बत रखता है	एहसान करने वालों से	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	

اِنْ	تُطِيْعُوا	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	يَرُدُّوْكُمْ	عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ
अगर	तुम इताअत करोगे	उनकी जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो फेर देंगे तुम्हें	तुम्हारी एड़ियों पर

فَتَنْقَلِبُوْا	خٰسِرِيْنَ ﴿149﴾	بَلِ	اللّٰهُ	مَوْلٰىكُمْ ۚ	وَهُوَ	خَيْرُ
वरना पलट जाओगे तुम	ख़सारा पाने वाले (होकर)	बल्कि	अल्लाह	मददगार है तुम्हारा	और वो	बेहतरीन है

النّٰصِرِيْنَ ﴿150﴾	سَنُلْقِيْ	فِيْ قُلُوْبِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوا	الرُّعْبَ
मदद करने वालों में	अनक़रीब हम डाल देंगे	दिलों में	उनके जिन्होंने	कुफ़्र किया	रौब को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سُلْطٰنًا ج	بِهٖ	يُنَزِّلْ	لَمْ	مَا	بِاللّٰهِ	اَشْرَكُوْا	بِمَآ
कोई दलील	जिसकी	उसने नाज़िल की	नहीं	उसको जो	साथ अल्लाह के	उन्होंने शरीक ठहराया	बवजह इसके जो

وَلَقَدْ	الظّٰلِمِيْنَ (151)	مَثْوَى	وَبِئْسَ	النَّارُ ط	وَمَاْوٰىهُمُ
और अलबत्ता तहक़ीक़	ज़ालिमों का	ठिकाना	और कितना बुरा है	आग है	और ठिकाना उनका

اِذَا	حَتّٰٓى	بِاِذْنِهٖ ج	تَحُسُّوْنَهُمْ	اِذْ	وَعْدَهٗٓ	اللّٰهُ	صَدَقَكُمُ
जब	यहां तक कि	उसके इज़्न से	तुम क़त्ल कर रहे थे उन्हें	जब	वादा अपना	अल्लाह ने	सच कर दिखाया तुमसे

مَآ	مِّنْ بَعْدِ	وَعَصَيْتُمْ	فِي الْاَمْرِ	وَتَنَازَعْتُمْ	فَشِلْتُمْ
जो	बाद इसके	और नाफ़रमानी की तुमने	(रसूल के) हुक्म के बारे में	और झगड़ा किया तुमने	बुज़दिली दिखाई तुमने

وَمِنْكُمْ	الدُّنْيَا	يُّرِيْدُ	مَّنْ	مِنْكُمْ	تُحِبُّوْنَ ط	مَّا	اَرٰىكُمْ
और तुम में से कोई है	दुनिया को	चाहता है	जो	तुममें से कोई है	तुम पसंद करते हो	वो जो	उसने दिखाया तुम्हें

لِيَبْتَلِيَكُمْ ج	عَنْهُمْ	صَرَفَكُمْ	ثُمَّ	الْاٰخِرَةَ ج	يُّرِيْدُ	مَّنْ
ताकि वो आज़माए तुम्हें	उनसे	उसने फेर दिया तुम्हें	फिर	आख़िरत को	चाहता है	जो

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ (152)	ذُوْ فَضْلٍ	وَاللّٰهُ	عَنْكُمْ ط	عَفَا	وَلَقَدْ
मोमिनों पर	फ़ज़्ल वाला है	और अल्लाह	तुमसे	उसने दरगुज़र किया	और अलबत्ता तहक़ीक़

يَدْعُوْكُمْ	وَّالرَّسُوْلُ	عَلٰٓى اَحَدٍ	تَلْوٗنَ	وَلَا	تُصْعِدُوْنَ	اِذْ
बुला रहे थे तुम्हें	और रसूल	किसी एक को	तुम मुड़ कर देखते थे	और ना	तुम चढ़े जा रहे थे	जब

مَا	عَلٰى	تَحْزَنُوْا	لِّكَيْلَا	بِغَمٍّ	غَمًّا	فَاَثَابَكُمْ	فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ
जो	उस पर	तुम रंज करो	ताकि ना	साथ ग़म के	ग़म	तो उसने दिया तुम्हें	तुम्हारे पीछे से

بِمَا	خَبِيْرٌۢ	وَاللّٰهُ	اَصَابَكُمْ ط	مَآ	وَلَا	فَاتَكُمْ
उसकी जो	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	और अल्लाह	पहुंचा तुम्हें	जो	और ना	छिन गया तुमसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَعْمَلُوْنَ ﴿153﴾	ثُمَّ	اَنْزَلَ	عَلَيْكُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	الْغَمِّ	اَمَنَةً
तुम अमल करते हो	फिर	उसने उतारा	तुम पर	बाद	ग़म के	अमन

نُّعَاسًا	يَّغْشٰى	طَآئِفَةً	مِّنْكُمْ ۙ	وَ طَآئِفَةٌ	قَدْ	اَهَمَّتْهُمْ
एक ऊंघ	ढांप लिया उसने	एक गिरोह को	तुम में से	और एक गिरोह	तहक़ीक़	फ़िक्र में डाला उन्हें

اَنْفُسُهُمْ	يَظُنُّوْنَ	بِاللّٰهِ	غَيْرَ الْحَقِّ	ظَنَّ	الْجَاهِلِيَّةِ ؕ
उनके नफ़्सों ने	वो गुमान कर रहे थे	अल्लाह के बारे में	नाहक़	गुमान करना	जाहिलियत का

يَقُوْلُوْنَ	هَلْ	لَّنَا	مِنَ الْاَمْرِ	مِنْ شَيْءٍ ؕ	قُلْ	اِنَّ
वो कह रहे थे	क्या है	हमारे लिए	मामले में से	कोई चीज़	कह दीजिए	बेशक

الْاَمْرَ	كُلَّهٗ	لِلّٰهِ ؕ	يُخْفُوْنَ	فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ	مَّا	لَا يُبْدُوْنَ
मामला	सब का सब	अल्लाह ही के लिए है	वो छुपा रहे थे	अपने नफ़्सों में	जो	नहीं वो ज़ाहिर कर रहे थे

لَكَ ؕ	يَقُوْلُوْنَ	لَوْ	كَانَ	لَنَا	مِنَ الْاَمْرِ	شَيْءٌ
आप के लिए	वो कह रहे थे	अगर	होता	हमारे लिए	मामले में से	कुछ भी

مَّا	قُتِلْنَا	هٰهُنَا ؕ	قُلْ	لَّوْ	كُنْتُمْ	لَبَرَزَ
ना	क़त्ल किए जाते हम	इस जगह	कह दीजिए	अगर	होते तुम	अलबत्ता निकल पड़ते

الَّذِيْنَ	كُتِبَ	عَلَيْهِمُ	الْقَتْلُ	اِلٰى	مَضَاجِعِهِمْ ۚ	وَ لِيَبْتَلِيَ
वो जो	लिख दिया गया था	जिन पर	क़त्ल होना	तरफ़	अपने सोने (मौत) के मक़ामात के	और ताकि आज़माए

اللّٰهُ	مَا	فِيْ صُدُوْرِكُمْ	وَ لِيُمَحِّصَ	مَا	فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ
अल्लाह	उसको जो	तुम्हारे सीनों में है	और ताकि ख़ालिस कर दे	उसको जो	तुम्हारे दिलों में है	और अल्लाह

عَلِيْمٌۢ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿154﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	تَوَلَّوْا	مِنْكُمْ	يَوْمَ
ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले (भेद)	बेशक	वो जो	फिर गए	तुम में से	जिस दिन

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِبَعْضِ	الشَّيْطٰنُ	اسْتَزَلَّهُمُ	اِنَّمَا	الْجَمْعٰنِ ۙ	الْتَقَى
बवजह बाज़(आमाल)के	शैतान ने	फिसलाया था उन्हें	बेशक	दो जमाअतें	आमने सामने हुईं

غَفُوْرٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	عَنْهُمْ ؕ	اللّٰهُ	عَفَا	وَلَقَدْ	كَسَبُوْا ۚ	مَا
बहुत बख़्शने वाला है	अल्लाह	बेशक	उनसे	अल्लाह ने	दरगुज़र किया	और अलबत्ता तहक़ीक़	उन्होंने कमाए	जो

ع 16 7 7

كَفَرُوْا	كَالَّذِيْنَ	لَا تَكُوْنُوْا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	حَلِيْمٌ ﴿155﴾ ع
जिन्होंने कुफ़्र किया	उन की तरह	ना तुम हो जाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	बहुत बुर्दबार है

كَانُوْا	اَوْ	فِي الْاَرْضِ	ضَرَبُوْا	اِذَا	لِاِخْوَانِهِمْ	وَقَالُوْا
थे वो	या	ज़मीन में	वो चले फिरे	जब	अपने भाईयों को	और उन्होंने कहा

قُتِلُوْا ۚ	وَمَا	مَاتُوْا	مَا	عِنْدَنَا	كَانُوْا	لَّوْ	غُزًّى
वो क़त्ल किए जाते	और ना	वो मरते	ना	पास हमारे	होते वो	अगर	गाज़ी/लड़ने वाले

يُحْيٖ	وَاللّٰهُ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ	حَسْرَةً	ذٰلِكَ	اللّٰهُ	لِيَجْعَلَ
ज़िंदा करता है	और अल्लाह	उनके दिलों में	हसरत का सबब	उसको	अल्लाह	ताकि बना दे

قُتِلْتُمْ	وَلَئِنْ	بَصِيْرٌ ﴿156﴾	تَعْمَلُوْنَ	بِمَا	وَاللّٰهُ	وَيُمِيْتُ ؕ
क़त्ल किए जाओ तुम	और अलबत्ता अगर	ख़ूब देखने वाला है	तुम अमल करते हो	उसे जो	और अल्लाह	और वो मौत देता है

خَيْرٌ	وَرَحْمَةٌ	مِّنَ اللّٰهِ	لَمَغْفِرَةٌ	مُتُّمْ	اَوْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
बहुत बेहतर है	और रहमत	अल्लाह की तरफ़ से	अलबत्ता बख़्शिश	मर जाओ तुम	या	अल्लाह के रास्ते में

لَاِلَى اللّٰهِ	قُتِلْتُمْ	اَوْ	مُّتُّمْ	وَلَئِنْ	يَجْمَعُوْنَ ﴿157﴾	مِّمَّا
अल्लाह के अलबत्ता तरफ़	क़त्ल किए जाओ तुम	या	मर जाओ तुम	और अलबत्ता अगर	वो जमा कर रहे हैं	उस से जो

كُنْتَ	وَلَوْ	لَهُمْ ۚ	لِنْتَ	مِّنَ اللّٰهِ	رَحْمَةٍ	فَبِمَا	تُحْشَرُوْنَ ﴿158﴾
होते आप	और अगर	उनके लिए	नर्म हो गए आप	अल्लाह की तरफ़ से	रहमत के	फिर बवजह	तुम इकट्ठे किए जाओगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَظًّا	غَلِيْظَ	الْقَلْبِ	لَانْفَضُّوْا	مِنْ حَوْلِكَ ۖ	فَاعْفُ	عَنْهُمْ
तुंदख़ू	सख़्त	दिल	अलबत्ता वो मुंतशिर हो जाते	आपके आस पास से	पस दरगुज़र कीजिए	उनसे

وَاسْتَغْفِرْ	لَهُمْ	وَشَاوِرْهُمْ	فِي الْاَمْرِ ۚ	فَاِذَا	عَزَمْتَ
और बख़्शिश मांगिए	उनके लिए	और मशवरा कीजिए उनसे	मामले में	फिर जब	पुख़्ता इरादा करें आप

فَتَوَكَّلْ	عَلَى اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿159﴾	اِنْ
तो तवक्कल कीजिए	अल्लाह पर	बेशक	अल्लाह	मोहब्बत रखता है	तवक्कल करने वालों से	अगर

يَّنْصُرْكُمُ	اللّٰهُ	فَلَا	غَالِبَ	لَكُمْ ۚ	وَاِنْ	يَّخْذُلْكُمْ
मदद करे तुम्हारी	अल्लाह	तो नहीं	कोई ग़ालिब आने वाला	तुम पर	और अगर	वो छोड़ दे तुम्हें

فَمَنْ	ذَا الَّذِيْ	يَنْصُرُكُمْ	مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ	وَعَلَى اللّٰهِ	فَلْيَتَوَكَّلِ
तो कौन है	वो जो	मदद करेगा तुम्हारी	बाद इसके	और अल्लाह ही पर	पस चाहिए के तवक्कल किया करें

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿160﴾	وَمَا	كَانَ	لِنَبِيٍّ	اَنْ	يَّغُلَّ ؕ	وَمَنْ	يَّغْلُلْ
ईमान वाले	और नहीं	है	किसी नबी के लिए	कि	वो ख़्यानत करे	और जो कोई	ख़्यानत करेगा

يَاْتِ	بِمَا	غَلَّ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ۚ	ثُمَّ	تُوَفّٰى	كُلُّ	نَفْسٍ
वो ले आएगा	उसको जो	उसने ख़्यानत की	दिन	क़यामत के	फिर	पूरा पूरा दिया जाएगा	हर	नफ़्स को

مَّا	كَسَبَتْ	وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿161﴾	اَفَمَنِ	اتَّبَعَ
जो	उसने कमाया	और वो	ना वो ज़ुल्म किए जाऐंगे	क्या भला वो जो	पैरवी करे

رِضْوَانَ اللّٰهِ	كَمَنْۢ	بَآءَ	بِسَخَطٍ	مِّنَ اللّٰهِ	وَمَاْوٰىهُ	جَهَنَّمُ ؕ
अल्लाह की रज़ा की	उस की तरह हो सकता है जो	पलटे	साथ नाराज़गी के	अल्लाह कि तरफ़ से	और ठिकाना उसका	जहन्नम हो

وَبِئْسَ	الْمَصِيْرُ ﴿162﴾	هُمْ	دَرَجٰتٌ	عِنْدَ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	بَصِيْرٌۢ
और कितनी बुरी है	लौटने की जगह	वो	(मुख़्तलिफ़) दर्जों में हैं	अल्लाह के नज़दीक	और अल्लाह	ख़ूब देखने वाला है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَعَثَ	اِذْ	عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	اللّٰهُ	مَنَّ	لَقَدْ	يَعْمَلُوْنَ (163)	بِمَا
उसने भेजा	जब	मोमिनों पर	अल्लाह ने	एहसान किया	अलबत्ता तहक़ीक़	वो अमल करते हैं	उसको जो

وَ يُزَكِّيْهِمْ	اٰيٰتِهٖ	عَلَيْهِمْ	يَتْلُوْا	مِّنْ اَنْفُسِهِمْ	رَسُوْلًا	فِيْهِمْ
और वो पाक करता है उन्हें	आयात उसकी	उन पर	वो तिलावत करता है	उनके नफ़्सों में से	एक रसूल	उन्हीं में

مِنْ قَبْلُ	كَانُوْا	وَ اِنْ	وَالْحِكْمَةَ ج	الْكِتٰبَ	وَ يُعَلِّمُهُمُ
इससे पहले	थे वो	और बेशक	और हिक्मत	किताब	और वो सिखाता है उन्हें

النصف

اَصَبْتُمْ	قَدْ	مُّصِيْبَةٌ	اَصَابَتْكُمْ	اَوَ لَمَّآ	مُّبِيْنٍ (164)	لَفِيْ ضَلٰلٍ
पहुंचाई तुमने	तहक़ीक़	एक मुसीबत	पहुंची तुम्हें	क्या भला जब	खुली/वाज़ेह	अलबत्ता गुमराही में

مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ط	هُوَ	قُلْ	هٰذَا ط	اَنّٰى	قُلْتُمْ	مِّثْلَيْهَا لا
तुम्हारे नफ़्सों की जानिब से है	वो	कह दीजिए	ये	कहां से (आई)	कहा तुमने	उस से दोगुनी

يَوْمَ	اَصَابَكُمْ	وَ مَآ	قَدِيْرٌ (165)	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	اللّٰهَ	اِنَّ
जिस दिन	पहुंचा तुम्हें	और जो कुछ	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	चीज़ के	हर	ऊपर	अल्लाह	बेशक

وَ لِيَعْلَمَ	الْمُؤْمِنِيْنَ (166) لا	وَ لِيَعْلَمَ	فَبِاِذْنِ اللّٰهِ	الْجَمْعٰنِ	الْتَقَى
और ताकि वो जान ले	मोमिनों को	और ताकि वो जान ले	पस अल्लाह के इज़्न से था	दो जमाअतें	आमने-सामने हुईं

اَوِ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	قَاتِلُوْا	تَعَالَوْا	لَهُمْ	وَ قِيْلَ	نَافَقُوْا صلے ج	الَّذِيْنَ
या	अल्लाह के रास्ते में	जंग करो	आओ	उन्हें	और कहा गया	मुनाफ़िक़त की	उनको जिन्होंने

لِلْكُفْرِ	هُمْ	لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ط	قِتَالًا	نَعْلَمُ	لَوْ	قَالُوْا	ادْفَعُوْا ط
कुफ़्र के	वो	जरूर पैरवी करते हम तुम्हारी	जंग करना	हम जानते होते	अगर	उन्होंने कहा	दिफ़ा करो

مَّا	بِاَفْوَاهِهِمْ	يَقُوْلُوْنَ	لِلْاِيْمَانِ ج	مِنْهُمْ	اَقْرَبُ	يَوْمَئِذٍ
वो जो	अपने मुंहों से	वो कह रहे थे	बनिस्बत ईमान के	उनसे	ज़्यादा क़रीब थे	उस दिन

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَيْسَ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ ط	وَاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِمَا	يَكْتُمُوْنَ ج ﴿167﴾	اَلَّذِيْنَ
नहीं था	उनके दिलों में	और अल्लाह	ज़्यादा जानता है	उसको जो	वो छुपाते हैं	वो जिन्होंने

قَالُوْا	لِاِخْوَانِهِمْ	وَقَعَدُوْا	لَوْ	اَطَاعُوْنَا	مَا	قُتِلُوْا ط	قُلْ
कहा	अपने भाईयों को	और वो ख़ुद बैठ गए	अगर	वो इताअत करते हमारी	ना	वो क़त्ल किए जाते	कह दीजिए

فَادْرَءُوْا	عَنْ اَنْفُسِكُمُ	الْمَوْتَ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿168﴾	وَلَا
पस दूर करो	अपने नफ़्सों से	मौत को	अगर	हो तुम	सच्चे	और ना

تَحْسَبَنَّ	الَّذِيْنَ	قُتِلُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	اَمْوَاتًا ط	بَلْ	اَحْيَآءٌ
आप हरगिज़ गुमान करें	उनको जो	क़त्ल कर दिए गए	अल्लाह के रास्ते में	मुर्दा	बल्कि	ज़िंदा हैं

عِنْدَ	رَبِّهِمْ	يُرْزَقُوْنَ لا ﴿169﴾	فَرِحِيْنَ	بِمَآ	اٰتٰهُمُ	اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖ لا
पास	अपने रब के	वो रिज़्क़ दिए जाते हैं	ख़ुश हैं	उस पर जो	अता किया उन्हें	अल्लाह ने	अपने फ़ज़्ल से

وَيَسْتَبْشِرُوْنَ	بِالَّذِيْنَ	لَمْ	يَلْحَقُوْا	بِهِمْ	مِّنْ خَلْفِهِمْ لا	اَلَّا
और वो ख़ुश होते हैं	उनके बारे में	नहीं	वो मिले	उन्हें	उनके पीछे से	कि ना

خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿170﴾	يَسْتَبْشِرُوْنَ	بِنِعْمَةٍ
कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	वो ख़ुश होते हैं	नेअमत पर

وقف لازم

مِّنَ اللّٰهِ	وَفَضْلٍ لا	وَّاَنَّ	اللّٰهَ	لَا يُضِيْعُ	اَجْرَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ج ﴿171﴾
अल्लाह की तरफ़ से	और फ़ज़्ल पर	और बेशक	अल्लाह	नहीं वो ज़ाया करता	अजर	ईमान वालों का

ع 17 16 8

اَلَّذِيْنَ	اسْتَجَابُوْا	لِلّٰهِ	وَالرَّسُوْلِ	مِنْۢ بَعْدِ	مَآ	اَصَابَهُمُ
वो जिन्होंने	हुक्म माना	अल्लाह का	और रसूल का	बाद इसके	जो	पहुंचा उन्हें

الْقَرْحُ ط	لِلَّذِيْنَ	اَحْسَنُوْا	مِنْهُمْ	وَاتَّقَوْا	اَجْرٌ	عَظِيْمٌ ج ﴿172﴾
ज़ख़्म	उनके लिए जिन्होंने	एहसान किया	उनमें से	और तक़वा किया	अज्र है	बहुत बड़ा

ع 2

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جَمَعُوْا	قَدْ	النَّاسَ	اِنَّ	النَّاسُ	لَهُمُ	قَالَ	اَلَّذِيْنَ
वो जमा हो गए हैं	तहक़ीक़	लोग	बेशक	लोगों ने	उन्हें	कहा	वो जो

اللّٰهُ	حَسْبُنَا	وَّقَالُوْا	اِيْمَانًا ۖۗ	فَزَادَهُمْ	فَاخْشَوْهُمْ	لَكُمْ
अल्लाह	काफ़ी है हमें	और उन्होंने कहा	ईमान में	पस उसने बढ़ा दिया उन्हें	पस डरो उनसे	तुम्हारे लिए

لَّمْ	وَفَضْلٍ	مِّنَ اللّٰهِ	بِنِعْمَةٍ	فَانْقَلَبُوْا	الْوَكِيْلُ (173)	وَنِعْمَ
नहीं	और फ़ज़्ल के	अल्लाह की तरफ़ से	साथ नेअमत के	पस वो पलट आए	कारसाज़	और कितना अच्छा है

ذُوْ فَضْلٍ	وَاللّٰهُ	رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ	وَّاتَّبَعُوْا	سُوْٓءٌ ۙ	يَمْسَسْهُمْ
फ़ज़्ल वाला है	और अल्लाह	अल्लाह की रज़ा की	और उन्होंने पैरवी की	किसी बुराई(तकलीफ़) ने	छुआ उन्हें

فَلَا	اَوْلِيَآءَهٗ ۠	يُخَوِّفُ	الشَّيْطٰنُ	ذٰلِكُمُ	اِنَّمَا	عَظِيْمٍ (174)
तो ना	अपने दोस्तों से	जो डराता है	शैतान है	ये	बेशक	बहुत बड़े

يَحْزُنْكَ	وَلَا	مُّؤْمِنِيْنَ (175)	كُنْتُمْ	اِنْ	وَخَافُوْنِ	تَخَافُوْهُمْ
ग़मगीन करें आपको	और ना	ईमान लाने वाले	हो तुम	अगर	और डरो मुझसे	तुम डरो उनसे

شَيْـًٔا ؕ	اللّٰهَ	يَّضُرُّوا	لَنْ	اِنَّهُمْ	فِي الْكُفْرِ ۚ	يُسَارِعُوْنَ	الَّذِيْنَ
कुछ भी	अल्लाह को	वो नुक़सान दे सकते	हरगिज़ नहीं	बेशक वो	कुफ़्र में	जल्दी करते हैं	वो जो

وَلَهُمْ	فِي الْاٰخِرَةِ ۚ	حَظًّا	لَهُمْ	يَّجْعَلَ	اَلَّا	اللّٰهُ	يُرِيْدُ
और उनके लिए	आख़िरत में	कोई हिस्सा	उनके लिए	वो रखे	कि ना	अल्लाह	चाहता है

لَنْ	بِالْاِيْمَانِ	الْكُفْرَ	اشْتَرَوُا	الَّذِيْنَ	اِنَّ	عَظِيْمٌ (176)	عَذَابٌ
हरगिज़ नहीं	बदले ईमान के	कुफ़्र को	ख़रीद लिया	वो जिन्होंने	बेशक	बहुत बड़ा	अज़ाब है

يَحْسَبَنَّ	وَلَا	اَلِيْمٌ (177)	عَذَابٌ	وَلَهُمْ	شَيْـًٔا ۚ	اللّٰهَ	يَّضُرُّوا
हरगिज़ गुमान करें	और ना	दर्दनाक	अज़ाब है	और उनके लिए	कुछ भी	अल्लाह को	वो नुक़सान दे सकते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اَنَّمَا	نُمْلِيْ	لَهُمْ	خَيْرٌ	لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ	اِنَّمَا
वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	बेशक जो	हम ढील दे रहे हैं	उन्हें	बेहतर है	उनके नफ़्सों के लिए	बेशक

نُمْلِيْ	لَهُمْ	لِيَزْدَادُوْٓا	اِثْمًا ۚ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	مُّهِيْنٌ (178)
हम ढील दे रहे हैं	उन्हें	ताकि वो बढ़ जाऐं	गुनाह में	और उनके लिए	अज़ाब है	रुस्वा करने वाला

مَا	كَانَ	اللّٰهُ	لِيَذَرَ	الْمُؤْمِنِيْنَ	عَلٰى	مَآ	اَنْتُمْ	عَلَيْهِ	حَتّٰى
नहीं	है	अल्लाह	कि वो छोड़ दे	मोमिनों को	ऊपर उसके	जो हो	तुम	जिस पर	यहां तक कि

يَمِيْزَ	الْخَبِيْثَ	مِنَ الطَّيِّبِ ؕ	وَمَا	كَانَ	اللّٰهُ	لِيُطْلِعَكُمْ
वो छांट दे	नापाक को	पाक से	और नहीं	है	अल्लाह	कि वो आगाह करे तुम्हें

عَلَى الْغَيْبِ	وَلٰكِنَّ	اللّٰهَ	يَجْتَبِيْ	مِنْ رُّسُلِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ ۖ
ग़ैब पर	और लेकिन	अल्लाह	चुन लेता है	अपने रसूलों में से	जिसे	वो चाहता है

فَاٰمِنُوْا	بِاللّٰهِ	وَرُسُلِهٖ ۚ	وَاِنْ	تُؤْمِنُوْا	وَتَتَّقُوْا	فَلَكُمْ
पस ईमान लाओ	अल्लाह पर	और उसके रसूलों पर	और अगर	तुम ईमान लाओगे	और तक़्वा करोगे	तो तुम्हारे लिए

اَجْرٌ	عَظِيْمٌ (179)	وَلَا	يَحْسَبَنَّ	الَّذِيْنَ	يَبْخَلُوْنَ	بِمَآ	اٰتٰىهُمُ
अजर है	बहुत बड़ा	और ना	हरगिज़ गुमान करें	वो जो	बुख़्ल करते हैं	साथ उसके जो	अता किया उन्हें

اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖ	هُوَ	خَيْرًا	لَّهُمْ ؕ	بَلْ	هُوَ	شَرٌّ	لَّهُمْ ؕ
अल्लाह ने	अपने फ़ज़्ल से	वो	बेहतर है	उनके लिए	बल्कि	वो	बुरा है	उनके लिए

سَيُطَوَّقُوْنَ	مَا	بَخِلُوْا	بِهٖ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ؕ	وَلِلّٰهِ
अनक़रीब वो तौक़ पहनाए जाऐंगे	उसका जो	उन्होंने बुख़्ल किया	जिसका	दिन	क़यामत के	और अल्लाह ही के लिए है

مِيْرَاثُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَاللّٰهُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرٌ (180) ع	18 ع 9 9
मीरास	आसमानों की	और ज़मीन की	और अल्लाह	उससे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब बाख़बर है	

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَقَدْ	سَمِعَ	اللّٰهُ	قَوْلَ	الَّذِيْنَ	قَالُوْٓا	اِنَّ	اللّٰهَ	فَقِيْرٌ	وَّنَحْنُ
अलबत्ता तहक़ीक़	सुन ली	अल्लाह ने	बात	उनकी जिन्होंने	कहा	बेशक	अल्लाह	फ़क़ीर है	और हम

اَغْنِيَآءُ	سَنَكْتُبُ	مَا	قَالُوْا	وَقَتْلَهُمُ	الْاَنْۢبِيَآءَ	بِغَيْرِ
ग़नी हैं	ज़रूर हम लिख लेंगे	जो	उन्होंने कहा	और क़त्ल करना उनका	अम्बिया को	बग़ैर

وقف لازم

حَقٍّ ۙ	وَّنَقُوْلُ	ذُوْقُوْا	عَذَابَ	الْحَرِيْقِ (181)	ذٰلِكَ	بِمَا	قَدَّمَتْ
हक़ के	और हम कहेंगे	चखो	अज़ाब	जलने का	ये	बवजह उसके जो	आगे भेजा

اَيْدِيْكُمْ	وَاَنَّ	اللّٰهَ	لَيْسَ	بِظَلَّامٍ	لِّلْعَبِيْدِ ۚ (182)	اَلَّذِيْنَ
तुम्हारे हाथों ने	और बेशक	अल्लाह	नहीं	ज़ुल्म करने वाला	बंदों पर	वो जिन्होंने

قَالُوْٓا	اِنَّ	اللّٰهَ	عَهِدَ	اِلَيْنَآ	اَلَّا	نُؤْمِنَ	لِرَسُوْلٍ	حَتّٰى
कहा	बेशक	अल्लाह ने	अहद ले रखा है	हमसे	कि ना	हम मानें	किसी रसूल को	यहां तक कि

يَاْتِيَنَا	بِقُرْبَانٍ	تَاْكُلُهُ	النَّارُ ۭ	قُلْ	قَدْ	جَآءَكُمْ	رُسُلٌ
वो लाए हमारे पास	एक क़ुर्बानी	खा जाए उसे	आग	कह दीजिए	तहक़ीक़	आए थे तुम्हारे पास	कई रसूल

مِّنْ قَبْلِيْ	بِالْبَيِّنٰتِ	وَبِالَّذِيْ	قُلْتُمْ	فَلِمَ	قَتَلْتُمُوْهُمْ	اِنْ
मुझसे पहले	साथ वाज़ेह दलाइल के	और साथ उस चीज़ के जो	कही तुमने	तो क्यों	क़त्ल किया तुमने उन्हें	अगर

كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ (183)	فَاِنْ	كَذَّبُوْكَ	فَقَدْ	كُذِّبَ	رُسُلٌ
हो तुम	सच्चे	फिर अगर	वो झुठलाऐं आपको	तो तहक़ीक़	झुठलाए गए	कई रसूल

مِّنْ قَبْلِكَ	جَآءُوْ	بِالْبَيِّنٰتِ	وَالزُّبُرِ	وَالْكِتٰبِ	الْمُنِيْرِ (184)
आपसे पहले	वो लाए	वाज़ेह दलाइल	और सहीफ़े	और किताब	रोशन

كُلُّ	نَفْسٍ	ذَآىِٕقَةُ	الْمَوْتِ ۭ	وَاِنَّمَا	تُوَفَّوْنَ	اُجُوْرَكُمْ
हर	नफ़्स	चखने वाला है	मौत को	और बेशक	तुम पूरे पूरे दिए जाओगे	अजर अपने

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْجَنَّةَ	وَاُدْخِلَ	عَنِ النَّارِ	زُحْزِحَ	فَمَنْ	الْقِيٰمَةِ ؕ	يَوْمَ
जन्नत में	और वो दाख़िल कर दिया गया	आग से	दूर किया गया	तो जो कोई	क़यामत के	दिन

الْغُرُوْرِ (185)	مَتَاعُ	اِلَّا	الدُّنْيَآ	الْحَيٰوةُ	وَمَا	فَازَ ؕ	فَقَدْ
धोखे का	सामान	मगर	दुनिया की	ज़िंदगी	और नहीं	वो कामयाब हुआ	तो तहक़ीक़

مِنَ الَّذِيْنَ	وَلَتَسْمَعُنَّ	وَاَنْفُسِكُمْ قف	فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ	لَتُبْلَوُنَّ
उनसे जो	और अलबत्ता तुम ज़रूर सुनोगे	अपने नफ़्सों में	अपने मालों में	अलबत्ता तुम ज़रूर आज़माए जाओगे

اَذًى	اَشْرَكُوْٓا	وَمِنَ الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	الْكِتٰبَ	اُوْتُوا
अज़ियत	शिर्क किया	और उनसे जिन्होंने	तुम से पहले	किताब	दिए गए

ذٰلِكَ	فَاِنَّ	وَتَتَّقُوْا	تَصْبِرُوْا	وَاِنْ	كَثِيْرًا ؕ
ये	तो बेशक	और तुम तक़वा करो	तुम सब्र करो	और अगर	बहुत सी

اُوْتُوا	الَّذِيْنَ	مِيْثَاقَ	اللّٰهُ	اَخَذَ	وَاِذْ	مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (186)
दिए गए	उनसे जो	पुख़्ता अहद	अल्लाह ने	लिया	और जब	हिम्मत\अज़्म के कामों में से है

فَنَبَذُوْهُ	تَكْتُمُوْنَهٗ ز	وَلَا	لِلنَّاسِ	لَتُبَيِّنُنَّهٗ	الْكِتٰبَ
फिर उन्होंने फेंक दिया उसे	तुम छुपाओगे उसे	और ना	लोगों के लिए	अलबत्ता तुम ज़रूर बयान करोगे उसे	किताब

فَبِئْسَ	قَلِيْلًا ؕ	ثَمَنًا	بِهٖ	وَاشْتَرَوْا	ظُهُوْرِهِمْ	وَرَآءَ
तो कितना बुरा है	थोड़ी में	क़ीमत	उसे	और उन्होंने बेच डाला	अपनी पुश्तों के	पीछे

اَتَوْا	بِمَآ	يَفْرَحُوْنَ	الَّذِيْنَ	لَا تَحْسَبَنَّ	يَشْتَرُوْنَ (187)	مَا
उन्होंने किया	उस पर जो	ख़ुश हो रहे हैं	उन्हें जो	ना आप हरगिज़ समझें	वो ख़रीदो-फ़रोख़्त करते हैं	जो

تَحْسَبَنَّهُمْ	فَلَا	يَفْعَلُوْا	لَمْ	بِمَا	يُّحْمَدُوْا	اَنْ	وَيُحِبُّوْنَ
आप हरगिज़ समझें उन्हें	तो ना	उन्होंने किया	नहीं	उस पर जो	वो तारीफ़ किए जाएं	कि	और वो पसंद करते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 19 9 10

بِمَفَازَةٍ	مِّنَ الْعَذَابِ ج	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (188)	وَلِلّٰهِ
निजात(पाने वाला)	अज़ाब से	और उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	और अल्लाह ही के लिए है

مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ط	وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ (189) ع
बादशाहत	आसमानों की	और ज़मीन की	और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	बहुत क़ादिर है

اِنَّ	فِيْ خَلْقِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَاخْتِلَافِ	الَّيْلِ	وَالنَّهَارِ
बेशक	तख़्लीक़ में	आसमानों	और ज़मीन के	और इख़्तिलाफ़ में	रात	और दिन के

لَاٰيٰتٍ	لِّاُولِي الْاَلْبَابِ (190) لا	الَّذِيْنَ	يَذْكُرُوْنَ	اللّٰهَ	قِيٰمًا
अलबत्ता निशानियां हैं	अक़्ल वालों के लिए	वो जो	याद करते हैं	अल्लाह को	खड़े

وَّقُعُوْدًا	وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ	وَيَتَفَكَّرُوْنَ	فِيْ خَلْقِ	السَّمٰوٰتِ
और बैठे	और अपने पहलुओं पर	और वो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	तख़्लीक़ में	आसमानों

وَالْاَرْضِ ج	رَبَّنَا	مَا	خَلَقْتَ	هٰذَا	بَاطِلًا ج	سُبْحٰنَكَ
और ज़मीन की	ऐ हमारे रब	नहीं	पैदा किया तूने	ये(सब)	बेमक़्सद	पाक है तू

فَقِنَا	عَذَابَ	النَّارِ (191)	رَبَّنَآ	اِنَّكَ	مَنْ	تُدْخِلِ	النَّارَ
पस बचा हमें	अज़ाब से	आग के	ऐ हमारे रब	बेशक तू	जिसे	तू दाख़िल करेगा	आग में

فَقَدْ	اَخْزَيْتَهٗ ط	وَمَا	لِلظّٰلِمِيْنَ	مِنْ اَنْصَارٍ (192)	رَبَّنَآ
पस तहक़ीक़	रुस्वा कर दिया तूने उसे	और नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई मददगार	ऐ हमारे रब

اِنَّنَا	سَمِعْنَا	مُنَادِيًا	يُّنَادِيْ	لِلْاِيْمَانِ	اَنْ	اٰمِنُوْا
बेशक हम	सुना हमने	एक पुकारने वाले को	वो पुकार रहा था	ईमान के लिए	कि	ईमान ले आओ

بِرَبِّكُمْ	فَاٰمَنَّا ق صلے	رَبَّنَا	فَاغْفِرْ لَنَا	ذُنُوْبَنَا	وَكَفِّرْ	عَنَّا
अपने रब पर	तो ईमान ले आए हम	ऐ हमारे रब	पस बख़्श दे हमारे लिए	हमारे गुनाहों को	और दूर कर दे	हमसे

سَيِّاٰتِنَا	وَتَوَفَّنَا	مَعَ	الْاَبْرَارِ ﴿193﴾ ج	رَبَّنَا	وَاٰتِنَا	مَا
हमारी बुराईयों को	और फ़ौत कर हमें	साथ	नेक लोगों के	ऐ हमारे रब	और दे हमें	जो

وَعَدْتَّنَا	عَلٰى رُسُلِكَ	وَلَا	تُخْزِنَا	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ط	اِنَّكَ
वादा किया तूने हमसे	अपने रसूलों के(ज़रिए)	और ना	तू रुसवा कर हमें	दिन	क़यामत के	बेशक तू

لَا تُخْلِفُ	الْمِيْعَادَ ﴿194﴾	فَاسْتَجَابَ	لَهُمْ	رَبُّهُمْ	اَنِّيْ
नहीं ख़िलाफ़ करेगा	वादे के	तो(दुआ) क़ुबूल कर ली	उनके लिए	उनके रब ने	के बेशक मैं

لَآ اُضِيْعُ	عَمَلَ	عَامِلٍ	مِّنْكُمْ	مِّنْ ذَكَرٍ	اَوْ	اُنْثٰى ج
नहीं मैं ज़ाया करुंगा	अमल	किसी अमल करने वाले का	तुम में से	ख़्वाह मर्द हो	या	औरत

بَعْضُكُمْ	مِّنْ بَعْضٍ ج	فَالَّذِيْنَ	هَاجَرُوْا	وَاُخْرِجُوْا	مِنْ دِيَارِهِمْ
बाज़ तुम्हारे	बाज़ से हैं	तो वो जिन्होंने	हिजरत की	और वो निकाले गए	अपने घरों से

وَاُوْذُوْا	فِيْ سَبِيْلِيْ	وَقٰتَلُوْا	وَقُتِلُوْا	لَاُكَفِّرَنَّ	عَنْهُمْ
और वो अज़ियत दिए गए	मेरे रास्ते में	और उन्होंने जंग की	और वो मारे गऐ	अलबत्ता मैं ज़रूर दूर कर दूंगा	उनसे

سَيِّاٰتِهِمْ	وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ج
बुराइयां उनकी	और अलबत्ता मैं ज़रूर दाख़िल करुंगा उन्हें	बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें

ثَوَابًا	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط	وَاللّٰهُ	عِنْدَهٗ	حُسْنُ	الثَّوَابِ ﴿195﴾
सवाब/बदला है	अल्लाह के पास से	और अल्लाह	उसके पास	अच्छा	सवाब/बदला है

لَا يَغُرَّنَّكَ	تَقَلُّبُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	فِي الْبِلَادِ ﴿196﴾ ط	مَتَاعٌ
हरगिज़ ना धोखे में डाले आपको	चलना फिरना	उनका जिन्होंने	कुफ़्र किया	शहरों में	फ़ायदा उठाना है

قَلِيْلٌ قف	ثُمَّ	مَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ط	وَبِئْسَ	الْمِهَادُ ﴿197﴾	لٰكِنِ
थोड़ा सा	फिर	ठिकाना उनका	जहन्नम है	और कितना बुरा है	ठिकाना	लेकिन

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	رَبَّهُمْ	لَهُمْ	جَنّٰتٌ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا
वो जो	डरे	अपने रब से	उनके लिए	बाग़ात हैं	बहती हैं	उनके नीचे से

الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا	نُزُلًا	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ	وَمَا	عِنْدَ اللّٰهِ
नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उन में	मेहमानी है	अल्लाह के पास से	और जो	पास है अल्लाह के

الثلثة

خَيْرٌ	لِّلْاَبْرَارِ ﴿198﴾	وَاِنَّ	مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	لَمَنْ	يُّؤْمِنُ
बेहतर है	नेकोकारों के लिए	और बेशक	अहले किताब में से	अलबत्ता जो	ईमान रखते हैं

بِاللّٰهِ	وَمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكُمْ	وَمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْهِمْ	خٰشِعِيْنَ
अल्लाह पर	और जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके	और जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ उनके	ख़ुशूअ करने वाले हैं

لِلّٰهِ ۙ	لَا يَشْتَرُوْنَ	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ	ثَمَنًا	قَلِيْلًا ؕ	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ
अल्लाह के लिए	नहीं वो बेचते	आयात को	अल्लाह की	क़ीमत	थोड़ी में	यही लोग हैं	उनके लिए है

اَجْرُهُمْ	عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ﴿199﴾
अजर उनका	पास उनके रब के	बेशक	अल्लाह	जल्द लेने वाला है	हिसाब

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اصْبِرُوْا	وَصَابِرُوْا	وَرَابِطُوْا ۟ قف
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	सब्र करो	और मुक़ाबले में मज़बूत रहो	और तैयार रहो

ع 20 11 11

وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ ﴿200﴾ ع
और डरो	अल्लाह से	ताकि तुम	फ़लाह पा जाओ

سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ 92 4

اٰيَاتُهَا: 176 | رُكُوْعَاتُهَا: 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا	النَّاسُ	اتَّقُوْا	رَبَّكُمُ	الَّذِيْ	خَلَقَكُمْ	مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ
ऐ	लोगो	डरो	अपने रब से	वो जिसने	पैदा किया तुम्हें	एक जान से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّخَلَقَ	مِنۡهَا	زَوۡجَهَا	وَبَثَّ	مِنۡهُمَا	رِجَالًا	كَثِيۡرًا
और उसने पैदा की	उसी से	बीवी उसकी	और उसने फैला दिए	उन दोनों से	मर्द	बहुत से

وَّنِسَآءً ۚ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	الَّذِىۡ	تَسَآءَلُوۡنَ	بِهٖ
और औरतें	और डरो	अल्लाह से	वो जो	तुम एक दूसरे से सवाल करते हो	उसके वास्ते से

وَالۡاَرۡحَامَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَلَيۡكُمۡ	رَقِيۡبًا ①	وَاٰتُوا
और रिश्तों को(काटने से)	बेशक	अल्लाह	है	तुम पर	निगरान	और दो

الۡيَتٰمٰٓى	اَمۡوَالَهُمۡ	وَلَا	تَتَبَدَّلُوا	الۡخَبِيۡثَ	بِالطَّيِّبِ ۖ	وَلَا
यतीमों को	माल उनके	और ना	तुम तब्दील करो	नापाक को	पाक से	और ना

تَاۡكُلُوۡٓا	اَمۡوَالَهُمۡ	اِلٰٓى	اَمۡوَالِكُمۡ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	حُوۡبًا
तुम खाओ	माल उनके	तरफ़	अपने मालों के(मिलाकर)	यक़ीनन वो	है वो	गुनाह

كَبِيۡرًا ②	وَاِنۡ	خِفۡتُمۡ	اَلَّا	تُقۡسِطُوۡا	فِى الۡيَتٰمٰى	فَانۡكِحُوۡا
बहुत बड़ा	और अगर	ख़ौफ़ हो तुम्हें	कि ना	तुम इंसाफ़ कर सकोगे	यतीम (लड़कियों) में	तो निकाह कर लो

مَا	طَابَ	لَكُمۡ	مِّنَ النِّسَآءِ	مَثۡنٰى	وَثُلٰثَ	وَرُبٰعَ ۚ
जो	पसंद आऐं	तुम्हें	औरतों में से	दो-दो	या तीन-तीन	या चार-चार

فَاِنۡ	خِفۡتُمۡ	اَلَّا	تَعۡدِلُوۡا	فَوَاحِدَةً	اَوۡ	مَا مَلَكَتۡ	اَيۡمَانُكُمۡ ؕ
फिर अगर	डरो तुम	कि ना	तुम अदल करोगे	तो एक ही से	या	जिनके मालिक हुए	दाऐं हाथ तुम्हारे

ذٰلِكَ	اَدۡنٰٓى	اَلَّا	تَعُوۡلُوۡا ③ ؕ	وَاٰتُوا	النِّسَآءَ	صَدُقٰتِهِنَّ
ये	ज़्यादा क़रीब है	कि ना	तुम ना इंसाफ़ी करो	और दो	औरतों को	महर उनके

نِحۡلَةً ؕ	فَاِنۡ	طِبۡنَ	لَكُمۡ	عَنۡ شَىۡءٍ	مِّنۡهُ	نَفۡسًا
ख़ुशदिली से	फिर अगर	वो ख़ुशी से देदें	तुम्हें	कोइ चीज़	उसमें से	ख़ुद

© E-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَكُلُوْهُ	هَنِيْٓـًٔا	مَّرِيْٓـًٔا ④	وَلَا	تُؤْتُوا	السُّفَهَآءَ	اَمْوَالَكُمُ
तो खाओ उसे	ख़ुश मज़ा	ख़ुश गवार (समझ कर)	और ना	तुम दो	नादानों को	माल अपने

الَّتِىْ	جَعَلَ	اللّٰهُ	لَكُمْ	قِيٰمًا	وَّارْزُقُوْهُمْ	فِيْهَا
वो जो	बनाया	अल्लाह ने	तुम्हारे लिए	क़याम (का ज़रिया)	और रिज़्क़ दो उन्हें	उसमें से

وَاكْسُوْهُمْ	وَقُوْلُوْا	لَهُمْ	قَوْلًا	مَّعْرُوْفًا ⑤	وَابْتَلُوا
और पहनाओ उन्हें	और कहो	उन्हें	बात	भली/अच्छी	और आज़माते रहो

الْيَتٰمٰى	حَتّٰٓى	اِذَا	بَلَغُوا	النِّكَاحَ ۚ	فَاِنْ	اٰنَسْتُمْ	مِّنْهُمْ
यतीमों को	यहां तक कि	जब	वो पहुंच जाऐं	निकाह (की उम्र को)	फिर अगर	पाओ तुम	उनमें

رُشْدًا	فَادْفَعُوْٓا	اِلَيْهِمْ	اَمْوَالَهُمْ ۚ	وَلَا	تَاْكُلُوْهَآ	اِسْرَافًا
समझ बूझ	तो दे दो	उन्हें	माल उनके	और ना	तुम खाओ उन्हें	इसराफ़ करते हुए

وَّبِدَارًا	اَنْ	يَّكْبَرُوْا ؕ	وَمَنْ	كَانَ	غَنِيًّا	فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ
और जल्दी करते हुए	कि	वो बड़े हो जाऐंगे	और जो कोई	हो	ग़नी	पस चाहिए के वो बचे

وَمَنْ	كَانَ	فَقِيْرًا	فَلْيَاْكُلْ	بِالْمَعْرُوْفِ ؕ	فَاِذَا	دَفَعْتُمْ
और जो कोई	हो	मोहताज	पस चाहिए के वो खाए	भले तरीक़े से	फिर जब	दे दो तुम

اِلَيْهِمْ	اَمْوَالَهُمْ	فَاَشْهِدُوْا	عَلَيْهِمْ ؕ	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ	حَسِيْبًا ⑥
उन्हें	माल उनके	तो गवाह बना लो	उन पर	और काफ़ी है	अल्लाह	ख़ूब हिसाब लेने वाला

لِلرِّجَالِ	نَصِيْبٌ	مِّمَّا	تَرَكَ	الْوَالِدٰنِ	وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠
मर्दों के लिए	एक हिस्सा है	उसमें से जो	छोड़ जाऐं	वालिदैन	और क़राबतदार

وَلِلنِّسَآءِ	نَصِيْبٌ	مِّمَّا	تَرَكَ	الْوَالِدٰنِ	وَالْاَقْرَبُوْنَ
और औरतों के लिए	एक हिस्सा है	उसमें से जो	छोड़ जाऐं	वालिदैन	और क़राबतदार

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِمَّا	قَلَّ	مِنْهُ	اَوْ	كَثُرَ ؕ	نَصِيْبًا	مَّفْرُوْضًا ⑦
उसमें से जो	क़लील हो	उस (माल) में से	या	कसीर/ज़्यादा हो	हिस्सा है	फ़र्ज़ किया गया

وَاِذَا	حَضَرَ	الْقِسْمَةَ	اُولُوا الْقُرْبٰى	وَالْيَتٰمٰى	وَالْمَسٰكِيْنُ
और जब	हाज़िर/मौजूद हों	तक़्सीम के वक़्त	क़राबतदार	और यतीम	और मसाकीन

فَارْزُقُوْهُمْ	مِّنْهُ	وَقُوْلُوْا	لَهُمْ	قَوْلًا	مَّعْرُوْفًا ⑧	وَلْيَخْشَ
तो तुम दो उन्हें	उस (माल) में से	और कहो	उन से	बात	भली	और चाहिए के डरें

الَّذِيْنَ	لَوْ	تَرَكُوْا	مِنْ خَلْفِهِمْ	ذُرِّيَّةً	ضِعٰفًا	خَافُوْا
वो जो	अगर	वो छोड़ जाऐं	अपने पीछे से	औलाद	कमज़ोर	वो ख़ौफ़ खाऐं

عَلَيْهِمْ ص	فَلْيَتَّقُوا	اللّٰهَ	وَلْيَقُوْلُوْا	قَوْلًا	سَدِيْدًا ⑨	اِنَّ	الَّذِيْنَ
उन पर	पस चाहिए कि डरें	अल्लाह से	और चाहिए कि कहें	बात	दुरुस्त	बेशक	वो जो

يَاْكُلُوْنَ	اَمْوَالَ	الْيَتٰمٰى	ظُلْمًا	اِنَّمَا	يَاْكُلُوْنَ	فِيْ بُطُوْنِهِمْ
खाते हैं	माल	यतीमों के	ज़ुल्म करते हुए	बेशक	वो खाते हैं	अपने पेटों में

نَارًا ؕ	وَسَيَصْلَوْنَ	سَعِيْرًا ع ⑩	يُوْصِيْكُمُ	اللّٰهُ	فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ق	ع 1 10 12
आग	और अनक़रीब वो जलेंगे	भड़कती हुई आग में	ताकीद करता है तुम्हें	अल्लाह	तुम्हारी औलाद के बारे में	

لِلذَّكَرِ	مِثْلُ	حَظِّ	الْاُنْثَيَيْنِ ج	فَاِنْ	كُنَّ	نِسَآءً
मर्द के लिए	मानिंद	हिस्सा है	दो औरतों के	फिर अगर	हों वो	औरतें

اثْنَتَيْنِ	فَلَهُنَّ	ثُلُثَا	مَا	تَرَكَ ج	وَاِنْ	كَانَتْ
दो से	तो उनके लिए	दो तिहाई	जो	उस (मय्यत) ने छोड़ा	और अगर	हो वो

وَاحِدَةً	فَلَهَا	النِّصْفُ ؕ	وَلِاَبَوَيْهِ	لِكُلِّ	وَاحِدٍ
एक(औरत)	तो उसके लिए	आधा है	और उसके मां-बाप के लिए	वास्ते हर	एक के

مِّنْهُمَا
उन दोनों में से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

السُّدُسُ	مِمَّا	تَرَكَ	اِنْ	كَانَ	لَهٗ	وَلَدٌ ۚ	فَاِنْ	لَّمْ
छठा हिस्सा है	उस में से जो	उसने छोड़ा	अगर	है	उसके लिए	कोई औलाद	फिर अगर	नहीं

يَكُنْ	لَّهٗ	وَلَدٌ	وَّوَرِثَهٗٓ	اَبَوٰهُ	فَلِاُمِّهِ	الثُّلُثُ ۚ
है	उसके लिए	कोई औलाद	और वारिस हों उसके	मां-बाप उसके	तो उसकी मां के लिए	तीसरा हिस्सा है

فَاِنْ	كَانَ	لَهٗٓ	اِخْوَةٌ	فَلِاُمِّهِ	السُّدُسُ	مِنْۢ بَعْدِ
फिर अगर	हों	उसके	बहन भाई	तो उसकी मां के लिए	छठा हिस्सा है	बाद

وَصِيَّةٍ	يُّوْصِيْ	بِهَآ	اَوْ	دَيْنٍ ۭ	اٰبَآؤُكُمْ	وَاَبْنَآؤُكُمْ
वसीयत पूरी करने के	वो वसीयत कर जाए	उसकी	या	क़र्ज़ (की अदायगी के बाद)	बाप तुम्हारे	और बेटे तुम्हारे

لَا تَدْرُوْنَ	اَيُّهُمْ	اَقْرَبُ	لَكُمْ	نَفْعًا ۭ	فَرِيْضَةً	مِّنَ اللّٰهِ ۭ
नहीं तुम जानते	उन में से कौन	ज़्यादा क़रीब है	तुम्हारे लिए	नफ़ा में	फ़रीज़ा है	अल्लाह की तरफ़ से

اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا ⑪	وَلَكُمْ	نِصْفُ	مَا	تَرَكَ
बेशक	अल्लाह	है	बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला	और तुम्हारे लिए	आधा है	जो	छोड़ा

اَزْوَاجُكُمْ	اِنْ	لَّمْ	يَكُنْ	لَّهُنَّ	وَلَدٌ ۚ	فَاِنْ	كَانَ	لَهُنَّ
तुम्हारी बीवियों ने	अगर	ना	हो	उनके लिए	कोई औलाद	फिर अगर	है	उनके लिए

وَلَدٌ	فَلَكُمُ	الرُّبُعُ	مِمَّا	تَرَكْنَ	مِنْۢ بَعْدِ	وَصِيَّةٍ
कोई औलाद	तो तुम्हारे लिए है	चौथा हिस्सा	उस में से जो	वो छोड़ जाऐं	बाद	वसीयत के

يُّوْصِيْنَ	بِهَآ	اَوْ	دَيْنٍ ۭ	وَلَهُنَّ	الرُّبُعُ	مِمَّا
वो औरतें वसीयत कर जाऐं	जिसकी	या	क़र्ज़ (की अदायगी के बाद)	और उन औरतों के लिए है	चौथा हिस्सा	उसमें से जो

تَرَكْتُمْ	اِنْ	لَّمْ	يَكُنْ	لَّكُمْ	وَلَدٌ ۚ	فَاِنْ	كَانَ	لَكُمْ
छोड़ा तुमने	अगर	नहीं	है	तुम्हारे लिए	कोई औलाद	फिर अगर	है	तुम्हारे लिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَدٌ	فَلَهُنَّ	الثُّمُنُ	مِمَّا	تَرَكۡتُمۡ	مِّنۡۢ بَعۡدِ	وَصِيَّةٍ
कोई औलाद	तो उनके लिए है	आठवां हिस्सा	उसमें से जो	छोड़ा तुमने	बाद	वसीयत के

تُوۡصُوۡنَ	بِهَآ	اَوۡ	دَيۡنٍ ؕ	وَاِنۡ	كَانَ	رَجُلٌ	يُّوۡرَثُ
तुम वसीयत कर जाओ	जिसकी	या	क़र्ज़ (की अदायगी के बाद)	और अगर	है	कोई मर्द	(जिसकी)मीरास ली जा रही है

كَلٰلَةً	اَوِ	امۡرَاَةٌ	وَّلَهٗۤ	اَخٌ	اَوۡ	اُخۡتٌ	فَلِكُلِّ	وَاحِدٍ
कलाला	या	कोई औरत	और उसके लिए हो	एक भाई	या	एक बहन	तो वास्ते हर	एक के

مِنۡهُمَا	السُّدُسُ ۚ	فَاِنۡ	كَانُوۡۤا	اَكۡثَرَ	مِنۡ ذٰلِكَ	فَهُمۡ	شُرَكَآءُ
उन दोनों में से	छठा हिस्सा है	फिर अगर	हों वो	ज़्यादा	उस से	तो वो	शरीक हैं

فِى الثُّلُثِ	مِنۡۢ بَعۡدِ	وَصِيَّةٍ	يُّوۡصٰى	بِهَآ	اَوۡ	دَيۡنٍ ۙ
एक तिहाई में	बाद	वसीयत के	वसीयत की जाए	जिसकी	या	क़र्ज़ (की अदायगी के बाद)

غَيۡرَ	مُضَآرٍّ ۚ	وَصِيَّةً	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيۡمٌ	حَلِيۡمٌ ؕ ⑫
ना	नुक़्सान पहुंचाने वाला हो	वसीयत है	अल्लाह की तरफ़ से	और अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	बहुत बुर्दबार है

تِلۡكَ	حُدُوۡدُ	اللّٰهِ ؕ	وَمَنۡ	يُّطِعِ	اللّٰهَ	وَرَسُوۡلَهٗ
ये	हुदूद हैं	अल्लाह की	और जो कोई	इताअत करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की

يُدۡخِلۡهُ	وَرَسُوۡلَهٗ	اللّٰهَ	يُّطِعِ	وَمَنۡ	اللّٰهِ ؕ
वो दाख़िल करेगा उसे	और उसके रसूल की	अल्लाह की	इताअत करेगा	और जो कोई	अल्लाह की

جَنّٰتٍ	تَجۡرِىۡ	مِنۡ تَحۡتِهَا	الۡاَنۡهٰرُ	خٰلِدِيۡنَ	فِيۡهَا ؕ	وَذٰلِكَ
बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	और ये है

الۡفَوۡزُ	الۡعَظِيۡمُ ⑬	وَمَنۡ	يَّعۡصِ	اللّٰهَ	وَرَسُوۡلَهٗ	وَيَتَعَدَّ
कामयाबी	बहुत बड़ी	और जो कोई	नाफ़रमानी करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	और वो तजावुज़ करेगा

حُدُوۡدَهٗ	يُدۡخِلۡهُ	نَارًا	خَالِدًا	فِيۡهَا ۪	وَلَهٗ	عَذَابٌ
उसकी हुदूद से	वो दाख़िल करेगा उसे	आग में	हमेशा रहने वाला है	उसमें	और उसके लिए	अज़ाब है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 2 4 13

مُّهِيْنٌ ﴿14﴾ ع	وَالّٰتِيْ	يَاْتِيْنَ	الْفَاحِشَةَ	مِنْ نِّسَآئِكُمْ
ज़लील करने वाला	और वो औरतें जो	आऐं	बेहयाई को	तुम्हारी औरतों में से

فَاسْتَشْهِدُوْا	عَلَيْهِنَّ	اَرْبَعَةً	مِّنْكُمْ ۚ	فَاِنْ	شَهِدُوْا
तो गवाह मांगो	उन पर	चार	तुममें से	फिर अगर	वो गवाही दे दें

فَاَمْسِكُوْهُنَّ	فِي الْبُيُوْتِ	حَتّٰى	يَتَوَفّٰهُنَّ	الْمَوْتُ	اَوْ
तो रोक लो उन्हें	घरों में	यहां तक के	फ़ौत कर दे उन्हें	मौत	या

يَجْعَلَ	اللّٰهُ	لَهُنَّ	سَبِيْلًا ﴿15﴾	وَالَّذٰنِ	يَاْتِيٰنِهَا	مِنْكُمْ
बना दे	अल्लाह	उनके लिए	कोई रास्ता	और वो दो (मर्द)जो	आऐं इस (बुराई)को	तुममें से

فَاٰذُوْهُمَا ۚ	فَاِنْ	تَابَا	وَاَصْلَحَا	فَاَعْرِضُوْا	عَنْهُمَا ؕ	اِنَّ
तो अज़ीयत दो उन दोनों को	फिर अगर	वो दोनों तौबा कर लें	और इस्लाह कर लें	तो ऐराज़ करो	उन दोनों से	बेशक

اللّٰهَ	كَانَ	تَوَّابًا	رَّحِيْمًا ﴿16﴾	اِنَّمَا	التَّوْبَةُ	عَلَى اللّٰهِ
अल्लाह	है	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला	निहायत रहम करने वाला	बेशक	तौबा (क़ुबूल करना)	अल्लाह के ज़िम्मे है

لِلَّذِيْنَ	يَعْمَلُوْنَ	السُّوْٓءَ	بِجَهَالَةٍ	ثُمَّ	يَتُوْبُوْنَ	مِنْ قَرِيْبٍ
उनके लिए जो	अमल करते हैं	बुरा	जहालत से	फिर	वो तौबा कर लेते हैं	क़रीब से

فَاُولٰٓئِكَ	يَتُوْبُ	اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا ﴿17﴾
तो यही वो लोग हैं	मेहरबान होता है	अल्लाह	उन पर	और है	अल्लाह	बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला

وَلَيْسَتِ	التَّوْبَةُ	لِلَّذِيْنَ	يَعْمَلُوْنَ	السَّيِّاٰتِ ۚ	حَتّٰٓى	اِذَا
और नहीं है	तौबा	उनके लिए जो	अमल करते हैं	बुरे	यहां तक कि	जब

حَضَرَ	اَحَدَهُمُ	الْمَوْتُ	قَالَ	اِنِّيْ	تُبْتُ	الْـٰٔنَ	وَلَا
आती है	उनमें से किसी एक को	मौत	वो कहता है	बेशक मैं	तौबा की मैं ने	अब	और ना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِيْنَ	يَمُوْتُوْنَ	وَهُمْ	كُفَّارٌ ط	اُولٰٓئِكَ	اَعْتَدْنَا	لَهُمْ
उनके लिए जो	मर जाते हैं	इस हाल में कि वो	काफ़िर हैं	यही लोग हैं	तैयार कर रखा है हमने	उनके लिए

عَذَابًا	اَلِيْمًا ⑱	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا يَحِلُّ	لَكُمْ	اَنْ
अज़ाब	दर्दनाक	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	नहीं हलाल	तुम्हारे लिए	कि

تَرِثُوا	النِّسَآءَ	كَرْهًا ط	وَلَا	تَعْضُلُوْهُنَّ	لِتَذْهَبُوْا	بِبَعْضِ
तुम वारिस बन जाओ	औरतों के	ज़बरदस्ती	और ना	तुम रोको उन्हें	ताकि तुम ले जाओ	बाज़

مَآ	اٰتَيْتُمُوْهُنَّ	اِلَّآ	اَنْ	يَّاْتِيْنَ	بِفَاحِشَةٍ	مُّبَيِّنَةٍ ج
जो	दिया तुमने उन्हें	मगर	ये कि	वो आऐं	बेहयाई को	खुली-खुली

وَعَاشِرُوْهُنَّ	بِالْمَعْرُوْفِ ج	فَاِنْ	كَرِهْتُمُوْهُنَّ	فَعَسٰٓى	اَنْ
और गुज़र-बसर करो उनके साथ	भले तरीक़े से	फिर अगर	तुम नापसंद करो उन्हें	तो हो सकता है	कि

تَكْرَهُوْا	شَيْـًٔا	وَّيَجْعَلَ	اللّٰهُ	فِيْهِ	خَيْرًا	كَثِيْرًا ⑲	وَاِنْ
तुम नापसंद करो	एक चीज़ को	और कर दे	अल्लाह	उसमें	भलाई	बहुत सी	और अगर

اَرَدْتُّمُ	اسْتِبْدَالَ	زَوْجٍ	مَّكَانَ	زَوْجٍ لا	وَّاٰتَيْتُمْ	اِحْدٰىهُنَّ
इरादा करो तुम	बदलने का	एक बीवी को	जगह	(दूसरी) बीवी के	और दे दिया हो तुमने	उनमें से किसी एक को

قِنْطَارًا	فَلَا	تَاْخُذُوْا	مِنْهُ	شَيْـًٔا ط	اَتَاْخُذُوْنَهٗ	بُهْتَانًا
ढेरों माल	तो ना	तुम लो	उसमें से	कुछ भी	क्या तुम लोगे उसे	बोहतान लगा कर

وَّاِثْمًا	مُّبِيْنًا ⑳	وَكَيْفَ	تَاْخُذُوْنَهٗ	وَقَدْ	اَفْضٰى	بَعْضُكُمْ
और गुनाह	खुले से	और किस तरह	तुम ले सकते हो उसे	हालांकि तहक़ीक़	पहुंच चुका	बाज़ तुम्हारा

اِلٰى بَعْضٍ	وَّاَخَذْنَ	مِنْكُمْ	مِّيْثَاقًا	غَلِيْظًا ㉑	وَلَا	تَنْكِحُوْا
तरफ़ बाज़ के	और वो ले चुकीं	तुम से	मीसाक़	पुख़्ता	और ना	तुम निकाह करो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَا	نَكَحَ	اٰبَآؤُكُمْ	مِّنَ النِّسَآءِ	اِلَّا	مَا	قَدْ	سَلَفَ ؕ	اِنَّهٗ
जिनसे	निकाह कर चुके	बाप तुम्हारे	औरतों में से	मगर	जो	तहक़ीक़	गुज़र चुका	बेशक वो

ع 3 8 14

كَانَ	فَاحِشَةً	وَّمَقْتًا ؕ	وَسَآءَ	سَبِيْلًا (22) ع	حُرِّمَتْ	عَلَيْكُمْ
है वो	बेहयाई का काम	और क़ाबिले नफ़रत	और बहुत ही बुरा	रास्ता	हराम कर दी गईं	तुम पर

اُمَّهٰتُكُمْ	وَبَنٰتُكُمْ	وَاَخَوٰتُكُمْ	وَعَمّٰتُكُمْ	وَخٰلٰتُكُمْ	وَبَنٰتُ
मांऐं तुम्हारी	और बेटियां तुम्हारी	और बहनें तुम्हारी	और फुफियां तुम्हारी	और ख़ालाऐं तुम्हारी	और बेटियां

الْاَخِ	وَبَنٰتُ	الْاُخْتِ	وَاُمَّهٰتُكُمُ	الّٰتِيْٓ	اَرْضَعْنَكُمْ	وَاَخَوٰتُكُمْ
भाई की	और बेटियां	बहन की	और मांऐं तुम्हारी	जिन्होंने	दूध पिलाया तुम्हें	और बहनें तुम्हारी

مِّنَ الرَّضَاعَةِ	وَاُمَّهٰتُ	نِسَآئِكُمْ	وَرَبَآئِبُكُمُ	الّٰتِيْ
रज़ाअत से	और मांऐं	तुम्हारी बीवियों की	और बेटियां तुम्हारी बीवियों की	वो जो

فِيْ حُجُوْرِكُمْ	مِّنْ نِّسَآئِكُمُ	الّٰتِيْ	دَخَلْتُمْ	بِهِنَّ ؗ	فَاِنْ	لَّمْ
तुम्हारी गोदों में हैं	तुम्हारी बीवियों में से	वो जो	दख़ूल किया तुमने	उनसे	फिर अगर	ना

تَكُوْنُوْا	دَخَلْتُمْ	بِهِنَّ	فَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْكُمْ ؗ	وَحَلَآئِلُ	اَبْنَآئِكُمُ
हो तुम	दुख़ूल कर चुके तुम	उनसे	तो नहीं	कोई गुनाह	तुम पर	और बीवियां	तुम्हारे बेटों की

الَّذِيْنَ	مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ	وَاَنْ	تَجْمَعُوْا	بَيْنَ	الْاُخْتَيْنِ	اِلَّا
वो जो	तुम्हारी पुश्तों से हैं	और ये कि	तुम जमा करो	दर्मियान	दो बहनों के	मगर

مَا	قَدْ	سَلَفَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (23) ۙ
जो	तहक़ीक़	गुज़र चुका	बेशक	अल्लाह	है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION